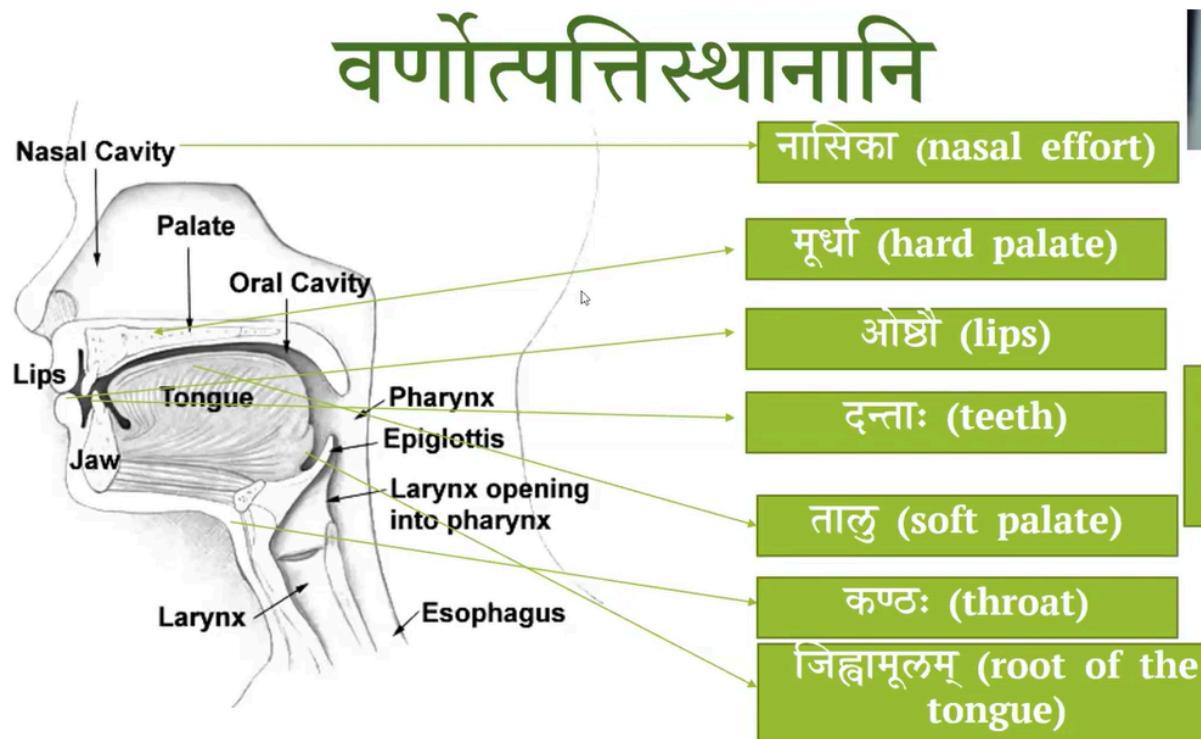


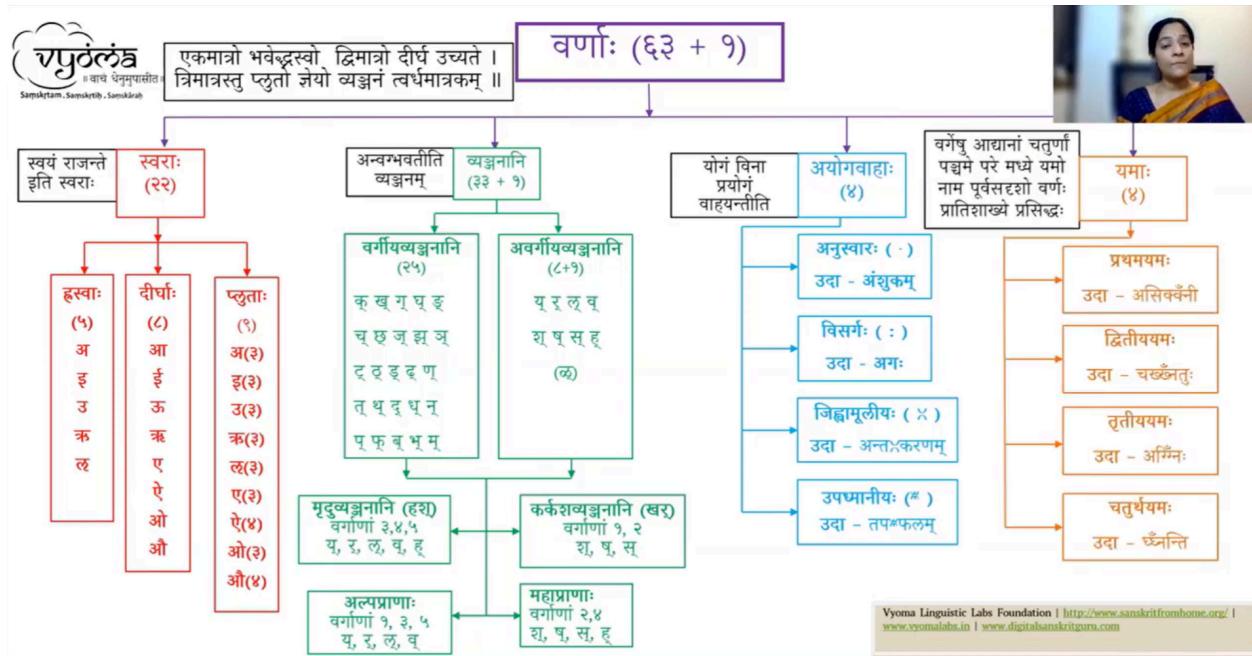
# Samskrita Bharati Pravesha

Notes based on the Youtube playlist

भाषाभ्यासः

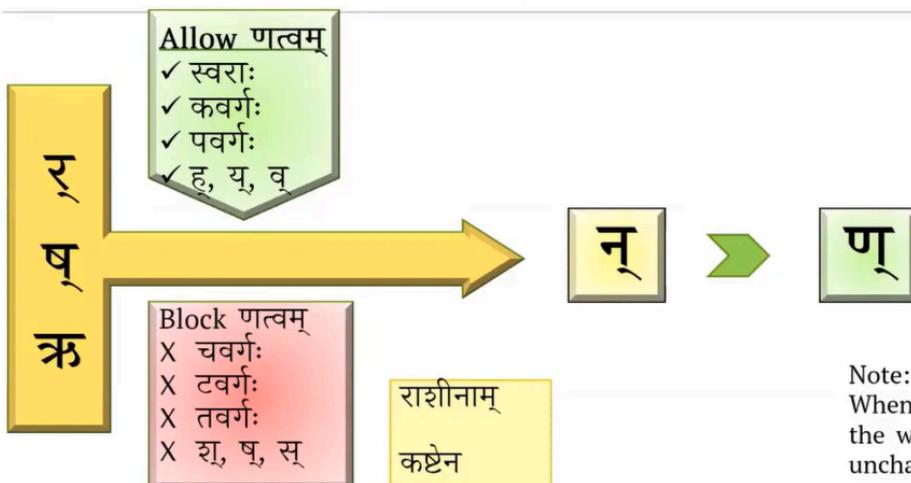


Source : Wikipedia File:Illu01\_head\_neck.jpg - Wikimedia Commons



व्यञ्जनम् + स्वरः => गुणिताक्षर  
व्यञ्जनम् + व्यञ्जनम् => संयुक्ताक्षरं

## णत्वम् - Rule



न becomes ण् when र् ष् ऋ are there with exceptions as above.

अनुनासिक + वर्गीयव्यञ्जनं

# Rules for joining the letters



| Example   | The letter in front of<br>ਅਨੁਸ਼ਾਰ | 5 <sup>th</sup> letter | Final<br>formation |
|-----------|-----------------------------------|------------------------|--------------------|
| ਗੰ + ਗਾ   | 3 <sup>rd</sup> letter of ਕ group | ਙ                      | ਗੜਾ                |
| ਸੰ + ਚਰਤਿ | 1 <sup>st</sup> letter of ਚ group | ਜ੍                     | ਸਜ਼ਰਤਿ             |
| ਕੰ + ਟਕਮ੍ | 1 <sup>st</sup> letter of ਟ group | ਣ੍                     | ਕਣਟਕਮ੍             |
| ਅੰ + ਤਾ:  | 1 <sup>st</sup> letter of ਤ group | ਨ੍                     | ਅਨਤਾ:              |

ਸੱਵਨਾਮਸਾਬਦਾ: - ਇਦਮ्, ਅਦਸ्, ਤਦ्, ਏਤਦ्

ਇਦਮ्-ਅਤੁ ਸਤਿਕ੃਷ਟ

- ਇਦਮ् is to denote close proximity

ਸਮੀਪਤਰਵਰਿ ਚ-ਏਤਦ: ਰੂਪਮ्

- ਏਤਦ् is to denote nearby

ਅਦਸ्-ਅਤੁ ਵਿਪ੍ਰਕ੃਷ਟ

- ਅਦਸ् is at a distance

ਤਦ्-ਇਤਿ ਪਰੋਕ਼ੇ ਵਿਜਾਨੀਯਾਤ्

- ਤਦ् is beyond perceivable distance

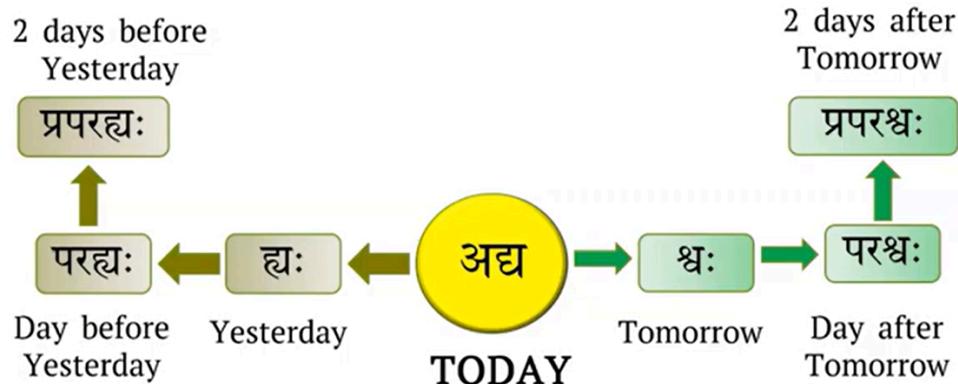
ਅਡਕ:

# संस्कृत में गिनती (Sanskrit Counting): 1 to 100

|                  |                      |                  |                 |
|------------------|----------------------|------------------|-----------------|
| 1. एकः           | 26. षड्विंशतिः       | 51. एकपञ्चाशत्   | 76. षट्सप्ततिः  |
| 2. द्वौ          | 27. सप्तविंशतिः      | 52. द्विपञ्चाशत् | 77. सप्तसप्ततिः |
| 3. त्रयः         | 28. अष्टाविंशतिः     | 53. त्रिपञ्चाशत् | 78. अष्टसप्ततिः |
| 4. चत्वारः       | 29. नवविंशतिः        | 54. चतुःपञ्चाशत् | 79. एकोनाशीतिः  |
| 5. पञ्च          | 30. त्रिंशत्         | 55. पञ्चपञ्चाशत् | 80. अशीतिः      |
| 6. षट्           | 31. एकत्रिंशत्       | 56. षट्पञ्चाशत्  | 81. एकाशीतिः    |
| 7. सप्त          | 32. द्वात्रिंशत्     | 57. सप्तपञ्चाशत् | 82. द्वशीतिः    |
| 8. अष्ट          | 33. त्रयत्रिंशत्     | 58. अष्टपञ्चाशत् | 83. त्र्यशीतिः  |
| 9. नव            | 34. चतुस्त्रिंशत्    | 59. एकोनषष्ठिः   | 84. चतुरशीतिः   |
| 10. दश           | 35. पञ्चत्रिंशत्     | 60. षष्ठिः       | 85. पञ्चाशीतिः  |
| 11. एकादश        | 36. षट्त्रिंशत्      | 61. एकषष्ठिः     | 86. षडशीतिः     |
| 12. द्वादश       | 37. सप्तत्रिंशत्     | 62. द्विषष्ठिः   | 87. सप्ताशीतिः  |
| 13. त्रयोदश      | 38. अष्टात्रिंशत्    | 63. त्रिषष्ठिः   | 88. अष्टाशीतिः  |
| 14. चतुर्दश      | 39. एकोनचत्वारिंशत्  | 64. चतुःषष्ठिः   | 89. एकोननवति:   |
| 15. पञ्चदश       | 40. चत्वारिंशत्      | 65. पञ्चषष्ठिः   | 90. नवतिः       |
| 16. षोडश         | 41. एकचत्वारिंशत्    | 66. षट्षष्ठिः    | 91. एकनवति:     |
| 17. सप्तदश       | 42. द्विचत्वारिंशत्  | 67. सप्तषष्ठिः   | 92. द्विनवति:   |
| 18. अष्टादश      | 43. त्रिचत्वारिंशत्  | 68. अष्टषष्ठिः   | 93. त्रिनवति:   |
| 19. नवदश         | 44. चतुश्चत्वारिंशत् | 69. एकोनसप्ततिः  | 94. चतुर्नवति:  |
| 20. विंशतिः      | 45. पञ्चचत्वारिंशत्  | 70. सप्ततिः      | 95. पञ्चनवति:   |
| 21. एकाविंशतिः   | 46. षट्चत्वारिंशत्   | 71. एकसप्ततिः    | 96. षण्णवति:    |
| 22. द्वाविंशतिः  | 47. सप्तचत्वारिंशत्  | 72. द्विसप्ततिः  | 97. सप्तनवति:   |
| 23. त्रयोविंशतिः | 48. अष्टचत्वारिंशत्  | 73. त्रिसप्ततिः  | 98. अष्टनवति:   |
| 24. चतुर्विंशतिः | 49. एकोनपञ्चाशत्     | 74. चतुःसप्ततिः  | 99. नवनवति:     |
| 25. पञ्चविंशतिः  | 50. पञ्चाशत्         | 75. पञ्चसप्ततिः  | 100. शतम्       |

Goes from right to left: 25: '5' first then '2': पञ्चविंशति

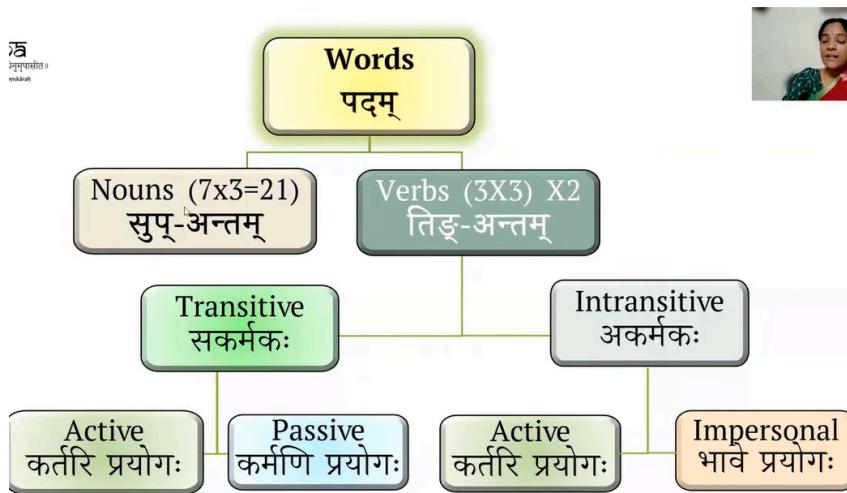
## समयः



Examples

|          |       |  |
|----------|-------|--|
| 3) 6:18  | ६:१८  | अष्टादशाधिकष्वादनम्                          |
| 4) 1:30  | १:३०  | सार्ध एकवादनम् (सार्धेकवादनम्)               |
| 5) 3:14  | ३:१४  | चतुर्दशाधिकत्रिवादनम्                        |
| 6) 8:30  | ८:३०  | सार्ध अष्टवादनम्                             |
| 7) 9:45  | ९:४५  | पादोनदशवादनम्                                |
| 8) 10:19 | १०:१९ | नवदशाधिकदशवादनम् /<br>एकोनविंशत्यधिकदशवादनम् |

कर्तरि कर्मणि प्रयोग (active passive voice)



## विभक्ति

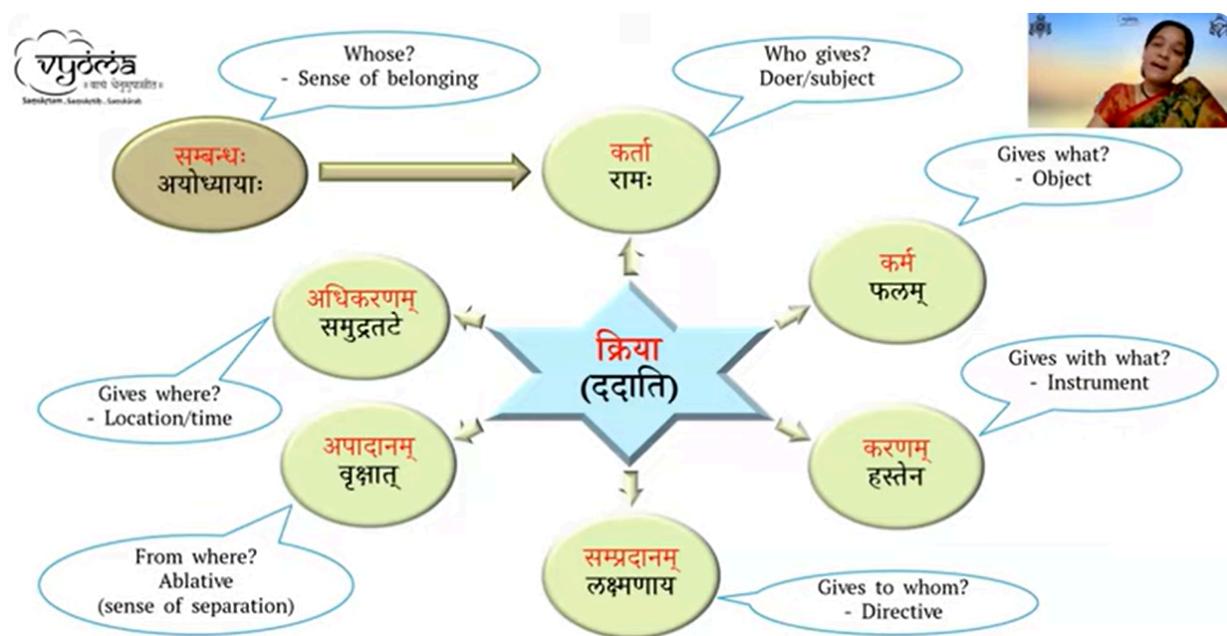
### विभक्तयः

रामो राजमणिः सदा विजयते  
रामं रमेशं भजे  
रामेणाभिहता निशाचरचमूः  
रामाय तस्मै नमः ।  
रामात् नास्ति परायणं परतरं  
रामस्य दासोस्यहं  
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे  
भो राम माम् उद्धर ॥

### विभक्तयः

गुरुः एव गतिः  
गुरुम् एव भजे  
गुरुणा-एव सह-अस्मि  
नमो गुरवे ।  
न गुरोः परमं  
शिशुरस्मि गुरोः  
मतिरस्ति गुरौ  
मम पाहि गुरो ॥

कृष्णः रक्षतु मां सदा चराचरगुरुः,  
कृष्णं नमस्यामि अहम्  
कृष्णन-अमरशत्रवः विनिहताः,  
कृष्णाय तु त्यं नमः ।  
कृष्णात् एव समुत्थितं जगत् इदं,  
कृष्णस्य दासः अस्मि अहम्  
कृष्णो भक्तिः अचञ्चला अस्तु  
भगवन्,  
हे कृष्ण तु त्यं नमः ॥



श्रीरामः शरणं समस्तजगताम्  
रामं विना का गतिः  
रामेण प्रतिहन्यते कलिमलं  
रामाय कार्यं नमः ।  
रामात् त्रस्यति कालभीमभुजगो  
रामस्य सर्वं वशे  
रामे भक्तिः अखण्डिता भवतु मे  
राम! त्वम् एव आश्रयः ॥

| Case                                    |           | एकवचनम्   | द्विवचनम्  | बहुवचनम् |
|---|-----------|-----------|------------|----------|
| Subject                                 | कर्ता     | १. रामः   | रामौ       | रामाः    |
| Vocative                                | सम्बोधन   | २. स.     | हे राम     | हे रामौ  |
| Object                                  | कर्म      | ३. रामम्  | रामी       | रामान्   |
| Instrumentative (by/with)               | करण       | ४. रामेण  | रामाभ्याम् | रामैः    |
| Directive/dative (to/for)               | सम्प्रदान | ५. रामाय  | रामाभ्याम् | रामेभ्यः |
| Ablative (from)                         | अपादान    | ६. रामात् | रामाभ्याम् | रामेभ्यः |
| Genitive/Possessive (of/s/belonging to) | सम्बन्धः  | ७. रामय   | रामयोः     | रामाणाम् |
| Locative (in/on/at)                     | अधिकरणम्  | ८. रामे   | रामयोः     | रामेषु   |

## Rules of द्वितीया विभक्ति:

- अभितः - in four directions
- परितः - surrounding (in all directions)
- समया, निकषा - near
- हा - exclamation of sorrow
- प्रति - towards
- उभयतः - both sides
- सर्वतः - everywhere

## तृतीया विभक्ति:

| Rules   | उदाहरणानि  |
|---|--|
| <ul style="list-style-type: none"> <li>करणम् - General rule</li> <li>कारणवाचक-शब्दः: Cause-effect</li> <li>सह/साकम्/समम्/ सार्थम्</li> <li>Adverbial sense</li> </ul> | <ul style="list-style-type: none"> <li>सः: <b>हस्तेन</b> फलं ददाति।</li> <li>शिशोः <b>जननेन</b> सर्वे सन्तुष्टाः।</li> <li>रामः <b>लक्षणेन</b> सह अरण्यं गच्छति।</li> <li>सः: <b>सन्तोषेण</b> कार्यं करोति।</li> </ul> |

## अव्ययानि

### 1) अव्ययं नाम किम्?

Words that do not change according to gender, number and case are called Avyayas or Indeclinables.

### 2) कानिचित् अव्ययानि प्रयुज्य षड्-वाक्यानि लिखत ।

Using any Avyaya-s frame six sentences in saṃskṛta.

- 1) गृहाद् बहिः उद्यानम् अस्ति ।
- 2) पुरा दशरथः नाम राजा आसीत् ।
- 3) असत्यं मा वद ।
- 4) सर्वदा दूरदर्शनं न द्रष्टव्यम् ।
- 5) ग्रन्थालये तूष्णीम् उपविश ।
- 6) संस्कृतं सर्वत्र प्रसरतु ।

|                              |                              |                             |   |
|------------------------------|------------------------------|-----------------------------|---|
| ❖ अतः - therefore            | ❖ यावत् - तावत् - as long as | ❖ पुरस्तात् - in front      | ❖ अन्तः - inside                        |
| ❖ ततः - then                 | ❖ दिवा - by day              | ❖ अधः/ अधस्तात् - below     | ❖ अन्तरा, अन्तरेण - except, without     |
| ❖ अथ - now begins            | ❖ ननु, खलु, किल - indeed.    | ❖ उपरि - above              | ❖ अग्रे - in front                      |
| ❖ स्वयम् - himself/ herself  | ❖ अग्रे, पुरतः - in front    | ❖ अतीव - exceedingly        | ❖ अथवा - or, rather                     |
| ❖ वृथा - in vain             |                              | ❖ पश्चात् - behind, at last | ❖ इटिति - quickly                       |
| ❖ परितः - surrounding        | ❖ अन्तः - inside             | ❖ पुनः, भूयः - again        | ❖ यद्यपि - तथापि - even though, however |
| ❖ समया, निकषा - near         | ❖ अलम् - enough              | ❖ पृथक् - without           | ❖ तु , किन्तु - but, however            |
| ❖ हा - exclamation of sorrow | ❖ इव - like                  | ❖ चेत् - if                 | ❖ धिक् - fie upon                       |
| ❖ प्रति - towards            | ❖ ऋते - without, except      | ❖ धृवम् - certainly         |   |
| ❖ नीचैः - low, gentle        | ❖ एवम् - thus                |                             |   |

|  |                  |                             |
|--|------------------|-----------------------------|
| ❖ प्राक् - before, at first              | ❖ विना - in vain | ❖ हन्त - Alas               |
| ❖ प्रायः - mostly                        | ❖ शनैः - slowly  | ❖ हे, रे, भोः = Oh!         |
| ❖ मिथ्या - false                         | ❖ सहसा - hastily | ❖ अरे = Oh !                |
| ❖ मृषा - falsely                         | ❖ साम्रतम् - now |                             |
| ❖ युगपत्, आशु, सपदि - instantly, quickly | ❖ सुष्टु - good  | ❖ कुत्रचित् - in some place |

|                  |  |
|------------------|--|
| ❖ चेत्           | - if                                     |
| ❖ यदा - तदा      | - when-then                              |
| ❖ यदि - तर्हि    | - if, then                               |
| ❖ यावत् - तावत्  | - so long as, till then                  |
| ❖ यथा - तथा      | - as, so (used in a sense of comparison) |
| ❖ यद्यपि - तथापि | - even though, still                     |

## सूक्ष्मिका:

- आरब्धम् उत्तमजनाः न परित्यजन्ति । –
  - Good people do not give up that which has been started.
  - पदानि – उत्तमजनः – Great person आरब्धम् – That which has been started न – not परित्यजति – gives up / abandons प्रश्नाः – वचनं किम्? (बहुवचनम्) / कर्तृपदं किम्?
   
उत्तमजानाः) / क्रियापदं किम्? (न) परित्यजन्ति कर्मपदं किम्? (आरब्धम्) आरब्धं के न परित्यजन्ति? उत्तमजनाः कि न परित्यजन्ति?
  - प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः । विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥२७॥ भर्तुहरिः (नीतिशतकम्)
- क्षणशः कणश्चैव विद्याम् अर्थं च साधयेत् ।
  - Knowledge is gained with every moment (of study) and wealth grows with every penny (earned / saved).
  - पदानि – क्षणम् – moment in time कणः – penny विद्या – knowledge अर्थः – wealth साधयेत् – may be achieved. क्षणशः Moment-by-moment कणशः – penny-by-penny
  - प्रश्नाः – कश्चन जनः (कर्तृपदम् – assumed) विद्यां (कर्मपदम्) कथं साधयेत्? अर्थं (कर्मपदम्) कथं साधयेत्?
  - "क्षणशः कणश्चैव विद्यां अर्थं च साधयेत्। क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्।" अर्थात् - "प्रत्येक क्षण का उपयोग सीखने के लिए और प्रत्येक सिक्के का उपयोग उसे बचाकर रखने के लिए करना चाहिए, क्षण को नष्ट करके विद्याप्राप्ति और सिक्कों को नष्ट करके धनप्राप्ति नहीं हो सकती।"
- सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणाम् ।
  - There is nothing impossible for a person who is enthusiastic.

- पदानि – सोत्साहानां नराणाम् – Of people who are enthusiastic नास्ति – does not exist असाध्यम् – not accomplishable
  - प्रश्ना: – वचनं किम्? (बहुवचनम्) / कर्तृपदं किम्? (असाध्यम्) / क्रियापदं किम्? ((न) अस्ति)
  - कर्मपदं किम्? (—x—) सोत्साहानां नराणाम् किं नास्ति ? केषाम् असाध्यं नास्ति?
  - काष्ठादग्निर्जयते मध्यमानात्
  - भूमिस्तोयं खन्यमाना ददाति ।
  - सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणां
  - मार्गारब्धाः सर्वयत्नाः फलंति ॥
  - Fire can be made from just twigs and nothing else by rubbing together. By digging the earth water can be obtained. If a person has enough enthusiasm, nothing is impossible. Success is guaranteed when efforts are put in the right direction
  - मात्र लकड़ियों को रगड़ कर आग उत्पन्न कर सकते हैं । भूमि को खोदकर जल को प्राप्त कर सकते हैं । यदि किसी व्यक्ति में पर्याप्त उत्साह है, तो कुछ भी असंभव नहीं है । जब प्रयासों को सही दिशा में लगाया जाता है, तो अवश्य सफलता मिलेगी।
- उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।
  - Lakshmi, goddess of prosperity, approaches one who is as industrious as a lion.
  - पदानि – उद्योगिनम् – An industrious person (object) पुरुषसिंहम् – man, who is like a lion, (object) उपैति – approaches लक्ष्मीः – prosperity (goddess of wealth).
  - प्रश्ना: – वचनं किम्? (एकवचनम्) / कर्तृपदं किम्? (लक्ष्मीः) / क्रियापदं किम्? (उपैति) / कर्मपदं किम्? (उद्योगिनं पुरुषसिंहम्) लक्ष्मीः कम् उपैति ? उद्योगिनं पुरुषसिंहं का उपैति ?
  - उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति । दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः ॥ ( पंचतंत्र, मित्रसम्प्राप्ति )
  - Goddess Lakshmi always stays with the industrious people. Everything depends on the Luck is the thinking of the lazy people. Therefore, we should leave apart the luck and devote ourself to do the hard work. If full efforts are made but desired results are not achieved, there is no harm in that.
  - उद्यमी पुरुष के पास ही सदैव लक्ष्मी जाती है । सब कुछ भाग्य पर निर्भर है ऐसा कायर पुरुष सोचते हैं । इसलिए भाग्य को छोड़ कर हमें उद्यम करना चाहिए । यथाशक्ति प्रयास करने के बावजूद भी यदि सफलता नहीं मिली तो इसमें कोई दोष नहीं है ।
  - तात्पर्यम् => उद्यमशीलान् लक्ष्मीः स्वयम् आश्रयति । सर्व दैवेन एव अनुग्रहितव्यम् इति ये प्रतीक्षन्ते ते कापुरुषाः । दैवमेव नावलम्बयन् स्वयं परिश्रमः कर्तव्यः । परिश्रमेण अपि कदाचित् फलं यदि न लभ्येत तर्हि कः दोषः तत्र ?
- क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे ।
  - Success lies in the inherent (natural) qualities of a great person, and not on paraphernalia (external things).
  - पदानि – क्रियासिद्धिः (स्त्री, प्र. ए.) – success in action सत्त्वे (नपुं, स. ए) – in inherent quality भवति (प्रपु, ए) – lies (is) महताम् (ष.ब. (महत्)) – of great people, न (अव्ययम्) – not उपकरणे (स.ए) – in accessories (like phone / car / big house ...)
  - प्रश्ना: – कर्तृपदं किम्? (क्रियासिद्धिः) / क्रियापदं किम्? (भवति) / वचनं किम्? (एकवचनम्) / कर्मपदं किम्? (नास्ति – यतः भवति इति अकर्मकधातुः) / क्रियासिद्धिः कुत्र भवति? कुत्र न भवति? (क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति । उपकरणे न भवति) / केषां क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति?
- चित्ते वाचि क्रियायां च महतामेकरूपता ।

- In thought, words, and deed, great people maintain singularity (what they think is what they do is what they say.)
  - पदानि – चित्ते (नपुं, स. ए.) – In thought वाचि (स्त्री, स. ए) – in words, क्रियायाम् (स्त्री, स. ए) – in action, च (अव्ययम्) – and महताम् (ष.ब. (महत)) – of great people, एकरूपता (स्त्री, प्र.ए) – ‘single’-ness
  - Full version: यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया । चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ॥
  - जैसा मन होता है वैसी ही वाणी होती है, जैसी वाणी होती है वैसे ही कार्य होता है । सज्जनों के मन, वाणी और कार्य में एकरूपता (समानता) होती है ।
  - प्रश्ना: – कर्तृपदं किम्? (एकरूपता) / क्रियापदं किम्? (भवति) / वचनं किम्? (एकवचनम्) / कर्मपदं किम्? (नास्ति – यतः भवति इति अकर्मकधातुः) / एकरूपता कुत्रु कुत्रु भवति? (चित्ते, वाचि, क्रियायां च भवति) / केषाम् एकरूपता?
- मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः:
  - A fool is one who is led (misled) by other's understanding (and desires).
  - पदानि – मूढः (fool) परप्रत्ययनेयबुद्धिः (one who allows himself to be misled by others.)
  - प्रश्ना: – कर्तृपदं किम्? (मूढः, परप्रत्ययनेयबुद्धिः) / क्रियापदं किम्? (भवति – assumed) / वचनं किम्? (एकवचनम्) / कर्मपदं किम्? (नास्ति – यतः भवति इति अकर्मकधातुः) / कः परप्रत्ययनेयबुद्धिः? / मूढः कीदृशः?
- जातसारोऽपि खल्वेकः सन्दिग्धे कार्यवस्तुनि ।
  - Even an expert, indeed, will have a doubt when he actually does the work.
  - पदानि – जातसारः (पुं -१,१) – expert अपि (अव) – even खलु (अव) – isn't that so? एकः (पुं (सर्व), १,१)- a person सन्दिग्धे (प्र.पु.ए.१,१)- has a doubt कार्यवस्तुनि (७,१) – at work
  - प्रश्ना: – कर्तृपदं किम्? (जातसारः, एकः) / क्रियापदं किम्? (सन्दिग्धे) / वचनं किम्? (एकवचनम्) / कर्मपदं किम्? (नास्ति – यतः सन्दिग्धे इति अकर्मकधातुः) / कदा /कस्मिन् सन्दिग्धे ? (कार्यवस्तुनि)
- विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः ।
  - They indeed are the brave people, whose mind does not get distracted even if there are distractions.
  - पदानि – विकारहेतौ (उ.पुं ७,१) सति (त्,पुं,७,१) – When there is a cause for distraction, विक्रियन्ते (प्र.पु.ब.१.३) – get scattered / distracted येषाम् (यत्,पुं,सर्व ६,३).- those people for whom ... चेतांसि (स्, नपुं, १.३) – thoughts ते (तत्,पुं,सर्व १,१)- they एव (अव) – only धीराः (पुं, १,३) – brave people.
  - प्रश्ना: – (This sentence is in passive voice) धीराः कीदृशाः? येषां चेतांसि न विक्रियन्ते ते एव धीराः। यद्यपि विकारहेतवः भवन्ति तथापि धीराणां चेतांसि न विक्रियन्ते ।
- णाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः ।
  - It is the qualities in a person that are to be admired, and, not their gender or age.
  - पदानि – गुणाः (अ.पुं, १,३) qualities पूजास्थानम् (नपुं, १,१) – that which is to be admired गुणिषु (न्,पुं,७,३) – in people who have good qualities न (अव) – not च (अव) – and लिङ्गम् (नपुं, १,१) – gender न च वयः (स्,नपुं,१,१)
  - प्रश्ना: – गुणिषु पूजास्थानं किम् अस्ति? लिङ्गम् / वयः / गुणः – एतेषु पूजास्थानं किम्?
  - गुणी गुणिनौ गुणिनः (गुणिन्,पुं)
  - वयः वयसी वयांसि (वयस्,नपुं)
- क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ममत्वम् उच्चैश्शरसाम् अतीव ।

- Even if lowly people come seeking refuge, great people take it as their absolute responsibility to take care of them.
  - पदानि – क्षुद्रे(7,1)अपि(0) नूनं(0) शरणं(2,1) प्रपन्ने(7,1) ममत्वम् (1,1) उच्चैःशिरसाम्(6,3) अतीव(0) ।
  - क्षुद्रः lowly person अपि even नूनम् indeed शरणम् refuge प्रपन्ने on seeking ममत्वम् sense of ownership उच्चैःशिरसाम् by great people अतीव a lot
  - प्रश्नाः – (Advanced)
  - क्षुद्रे अपि नूनं शरणं प्रपन्ने उच्चैशिरसां ममत्वम् अतीव (अस्ति) । कर्तृपदं किम्? ममत्वम् । क्रियापदं किम्? अस्ति । ममत्वं कथम् अस्ति? अतीव अस्ति । केषां ममत्वम्? – उच्चैशिरसां ममत्वम् । उच्चैशिरसां ममत्वं कदा अतीव भवति? यदा क्षुद्राः अपि जनाः शरणं प्रार्थयितुम् आगच्छन्ति तदा उच्चैशिरसां ममत्वम् अतीव भवति ।
- जीवने यावदादानं स्यात् प्रदानं ततोधिकम् ।
  - However much might be one's income (in life), one should give more than that to others. One should give more than what one receives.
  - पदानि – जीवने(7,1) यावत् आदानं (1,1) स्यात् (possibility – प्र.पु. ए.व.) प्रदानं(1,1) ततोधिकम् (1,1) ।
  - जीवने – in life यावत् (0) – as much आदानं – income स्यात् – likely प्रदानं – giving (to others) ततः (0) from that अधिकम् – more ।
  - प्रश्नाः – जीवने आदानम् अधिकं भवतु वा प्रदानम् अधिकं वा?

## सुभाषितानि

- अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् । उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
  - [यह मेरा है, वह पराया है, ऐसे छोटे विचार के व्यक्ति करते हैं! उच्च चरित्र वाले लोग समस्त संसार को ही परिवार मानते हैं!!]
- उद्यमेनैव सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः । नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥ - नारायण पण्डितः (हितोपदेशः)
  - जिस प्रकार सोते हए सिंह के मुँह में मृग स्वयं नहीं प्रवेश करता, उसी प्रकार केवल इच्छा करने से सफलता प्राप्त नहीं होती है। अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है।
- न कश्चिदपि जानाति किं कस्य श्वो भविष्यति । अतः श्वः करणीयानि कर्याटद्यैव बुद्धिमान् ॥
  - कल क्या होगा यह कोई नहीं जानता है इसलिए कल के करने योग्य कार्य को आज कर लेने वाला ही बुद्धिमान् है।]
- सदयं हृदयं यस्य भाषितं सत्यभूषितम् । कायः परहिते यस्य कलिस्तस्य करोति किम् ॥
  - करुणामय, सत्यवचनी और दूसरों की भलाई के लिए प्रयास करने वाले व्यक्ति को कलि भी क्या बिगाड़ सकता है? ]
- आचार्यात् पादमादते पादं शिष्यः स्वमेधया । पादं सब्रह्मचारिभ्यः पादं कालक्रमेण च ॥
  - पदच्छेदः आचार्यात्, पादम्, आधते, पादं, शिष्यः, स्वमेधया, पादं, सब्रह्मचारिभ्यः, पादं, कालक्रमेण, च ।
  - शिष्य अपने गुरु से पाव हिस्सा ज्ञान प्राप्त करता हैं, पाव हिस्सा अपनी बुद्धि से प्राप्त करता हैं, पाव हिस्सा अपने सहपाठियों से प्राप्त करता हैं और पाव हिस्सा समय के साथ आत्मानुभव से प्राप्त करता रहता हैं। इस प्रकार वह विभिन्न स्रोतों से सीखता है और उसे ज्ञानार्जन की इस निरंतर प्रक्रिया को आजीवन होशपूर्वक जारी रखने की आवश्यकता होती है।

- तात्पर्यम्: शिष्यः आचार्यात् पादभागं ज्ञानं प्राप्नोति । स्वीयया बुद्धिशक्त्या अपरं पादभागं सम्पादयति । सहाध्यायिभ्यः अन्यत् पादभागम् आसादयति । कालक्रमेण अपरं पादभागं ज्ञानं प्राप्स्यति ।
- छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे । फलान्यापि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषाः इव ॥
  - Trees themselves stand in the sun and offer shade to the others . Their fruits are also for the sake of others. Trees are just like good people.
  - वृक्ष दूसरों को छाँव देते हैं। खुद धूप में खडे रहते हैं। इनके फल भी दूसरों के लिए होते हैं। सचमुच वृक्ष सत्पुरुष जैसे होते हैं।
- त्यजेदेकं कुलस्यार्थं ग्रामस्यार्थं कुलं त्यजेत् । ग्रामं जनपदस्यार्थं आत्मार्थं पृथिवीं त्यजेत् ॥  
(श्रीचाणक्यविरचितं चाणक्यनीति ॥३.१०॥)
  - पदच्छेदः त्यजेत्, एकं, कुलस्यार्थं, ग्रामस्यार्थं, कुलं, त्यजेत्, ग्रामं, जनपदस्यार्थं, आत्मार्थं, पृथिवीं, त्यजेत् ।
  - तात्पर्यम्: कुलस्य उद्धाराय यदि अवश्यं तर्हि जनः त्यक्तत्व्यः, ग्रामस्य निमित्तं कुलस्य त्यागः करणीयः, जनपदस्य निमित्तं कदाचित् ग्रामस्य त्यक्तत्व्यः, परमात्मनः साक्षात्कारार्थं जगत् एव त्यक्तत्व्यं भवति ।
- उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः । अपकारिषु यः साधुः स साधुरिति कीर्तितः ॥
  - जेव्हा मनुष्य आपल्यावर उपकार करणान्यांशीच सौजन्याने वागतो , त्या वागण्यात कसले साधुत्व ? उपकार केल्याबद्दल ते सौजन्य असते. विद्वानांच्या मते मनुष्य जेव्हा आपल्यावर उपकार करणान्यांशीही सारख्याच सौजन्याने वागतो , तेच खरे साधुत्व .
- न किञ्चित् सहसा कार्यं कार्यविदा क्वचित् । क्रियते चेत् विविच्यैव तस्य श्रेयः करस्थितम् ॥
  - Never should a wise man do work in haste. If he does it with due deliberation, success is surely in his hands.
- वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं दुकूलैः सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः । स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः ॥
  - जिस व्यक्ति में कोई इच्छा नहीं होती, वह सदैव संतुष्ट रहता है और उसे ही धनवान कहा जा सकता है। निर्धन वह व्यक्ति है जो प्रचुर धन होने पर भी इच्छाओं के कारण उत्पन्न संतोष के अभाव के कारण मन में दुःख भोगता है।
  - तात्पर्यम् : कश्चन संन्यासी राजानम् उद्दिश्य वदति – आश्रमे वसन्तः वयं वल्कलवस्त्रैः एव सन्तुष्टाः स्मः । भवान् कौशेयवस्त्राणि धरन् सन्तोषम् अनुभवति । भवतः मम च सन्तोषः समानः एव । तत्र न कोपि भेदः । यस्य तृष्णा अधिका अस्ति सः एव दरिद्रः । मनः यदि तृप्तं स्यात् तर्हि कः धनिकः ? कः दरिद्रः ?
- छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे । फलान्यापि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इव ॥ विक्रमचरितम्
  - वृक्ष दूसरों को छाँव देते हैं। खुद धूप में खडे रहते हैं। इनके फल भी दूसरों के लिए होते हैं। सचमुच वृक्ष सत्पुरुष जैसे होते हैं।

3) वृक्षाः सत्पुरुषाः इति किमर्थं कथ्यन्ते?

Trees, despite standing in the hot sun themselves, provide cool shade to others. They also provide fruits for others. Hence, trees are comparable to good people who endure hardships in order to bring welfare for others in a selfless manner.

○

# व्यावहारिक शब्दावली

## बन्धुवाचक शब्दाः

| शब्दः                  | कः /<br>का     | कस्य/<br>कस्याः | शब्दः                  | कः /<br>का         | कस्य/<br>कस्याः |
|------------------------|----------------|-----------------|------------------------|--------------------|-----------------|
| (Relationship<br>ship) | (Who<br>is it) | (Who<br>se?)    | (Relationship<br>ship) | (Wh<br>o is<br>it) | (Who<br>se?)    |
| जनकः /<br>पिता         | दशर<br>थः      | रामः            | पितामहः                | दशर<br>थः          | लवकु<br>शौ      |
| मातामहः                | जनक<br>राजः    | लवकु<br>शौ      | पुत्रः                 | रामः               | दशर<br>थः       |
| सहोदरः /<br>अग्रजः     | युधि<br>ष्ठिरः | अर्जुनः         | सहोदरः /<br>अनुजः      | अर्जु<br>नः        | युधि<br>ष्ठिरः  |
| मातुलः                 | कंसः           | कृष्णः          | पति:                   | रामः               | सीता            |
| श्वशुरः                | दशर<br>थः      | सीता            | पौत्रः                 | लवः                | दशर<br>थः       |
| जामाता                 | रामः           | जनक<br>राजः     | स्नेहितः /<br>मित्रम्  | कुचे<br>लः         | कृष्णः          |

| जननी /<br>माता    | कौस<br>ल्या  | रामः          | पितामही | कौस<br>ल्या      | लवकु<br>शौ  |
|-------------------|--------------|---------------|---------|------------------|-------------|
| मातामही           | भूमादे<br>वी | लवकु<br>शौ    | पुत्री  | सीता             | जनक<br>राजः |
| सहोदरी /<br>अनुजा | शुभद्रा      | कृष्णः        | अग्रजा  | गा<br>न्धा<br>री | शकुनी       |
| मातुलानी          | रुक्मि<br>णी | अभिम<br>न्युः | भार्या  | सीता             | रामः        |
| भ्रातृजाया        | सीता         | लक्ष्म<br>णः  | स्नुषा  | सीता             | दशर<br>थः   |
| श्वश्रुः          | कौस<br>ल्या  | सीता          |         |                  |             |

## वृत्तिकारा: – Professions

| पदम् (Word)                                 | पदम्  |
|---|---|
| पुंलिङ्गो(m)<br><br>स्त्री<br>लि<br>इंगो(f) | उदाहरण<br>म्<br><br>पुंलि<br>इंगो<br><br>स्त्रीलि<br>इंगो<br><br>उदाहरण<br>म् |

चित्रकारः

चित्र  
कारी

राजा  
रविवर्मा

सेवकः

भारवाहः

अद्याप  
कः

चर्मकारः

चालकः

कर्मकरः

लेखकः

नर्तकः

कृषकः

सैनिकः

प्रबन्ध  
कः

लिपिकारः

निर्देश  
कः

नटः

पाचकः

धीवरः

आरक्ष  
कः

सुवर्णकारः

अर्चकः

आपणिकः

आप  
णि  
का

व्याधः

व्याधा

विक्रयिकः

वैद्यः

गोपालकः

गोपा  
लि  
का

## पाल्यजन्तवः – Domestic Animals

अजः अजा गौः(/धेनुः) वृषभः तर्णकः महिषः महिषी गजः वराहः अश्वः गर्दभः  
मेषः मार्जारः शुनकः शशः कुक्कुटः कुक्कुटी कादम्बः शुकः मूषकः पारावतः चटकः

goat, female goat, cow, bull, calf, bison, buffalo, elephant, pig/boar, horse,  
donkey, sheep/ram, cat, dog, rabbit, rooster, hen, duck, parrot, rat,  
pigeon, sparrow

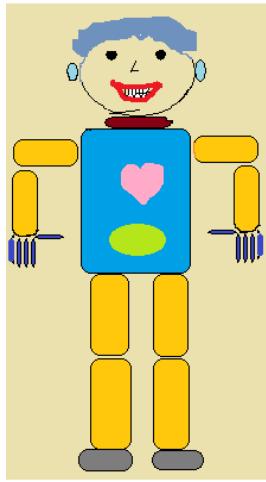
(अजः अजौ अजाः / अजा अजे अजाः .....)

## शरीरावयवाः (सामान्याः) – Body Parts – Commonly used terms

पुलिङ्गपदानि – केशः कपोलः ओष्ठः दन्तः कर्णः कण्ठः स्कन्धः भुजः हस्तः नखः पादः ऊरुः

स्त्रीलिङ्गपदानि – नासिका जिह्वा जड्घा अङ्गुली

नपुंसकलिङ्गपदानि – मस्तकम् ललाटम् नेत्रम् मुखम् वदनम् वक्षः स्थलम् रक्तम् जानु चर्म



पुल्लिङ्गपदानि

केशः  
कपोलः  
ओष्ठः  
दन्तः  
कर्णः  
कण्ठः  
स्कन्धः  
भुजः  
हस्तः  
नखः  
पादः  
ऊरः

|      |          |                      |            |            |       |          |       |      |      |      |       |
|------|----------|----------------------|------------|------------|-------|----------|-------|------|------|------|-------|
| Hair | cheek    | lip                  | tooth      | ear        | neck  | shoulder | arm   | hand | nail | foot | thigh |
| nose | tongue   | calf (knee to ankle) |            | finger     |       |          |       |      |      |      |       |
| head | forehead | eye                  | face/mouth | mouth/face | chest |          | blood | knee | skin |      |       |

ख्रीतिङ्गपदानि

नासिका  
जिह्वा  
जड्घा  
अड्गुली

**शरीरावयवाः**  
(सामान्याः)  
**Body Parts**  
(commonly used  
terms)

नपुंसकतिङ्गपदानि

मस्तकम्  
ललाटम्  
नेत्रम्  
मुखम्  
वदनम्  
वक्षःस्थलम्  
रक्तम्  
जानु  
चर्म

## लेखनसामग्री

क

ख

ज

प

५. पुर्वशः  
5 Book

मात्रा

मात्रा

लेखनसामग्री - stationery items

सुधा खण्डः -  Chalk piece.

रब्बरबन्धः -  Rubber band

नियसिः -  Glue

पत्रभारः -  Paper weight

उपीठिका -  Table Drawers

अन्तःपेटिका -  Hole puncher

रन्ध्रिका -  puncher

मृदुमुद्रा -  Rubber stamp

मापिका -  Ruler

लेपनपटिका -  adhesive tape

लेशनी -  Open

अड़कनी -  HB Pencil

वर्णलेखनी -  RED

योजिनी -  Stapler

पत्रसूची -  Push pin

मार्जनी -  Eraser

कर्तरी -  Scissors

फुस्तकम् -  Book

खेतपत्रम् -  White paper

लेखनपीठम् -  Writing tablet

दंडाकम् -  Gemclip

कृष्णफलकम् -  Blackboard

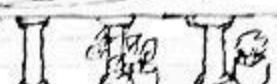
गृहविभागः

प्र० ६ : Part VI

प्रासादः - Palace

ओपनिंग्सः -  ३ Front door  
dining hall

शौचालयः -  Washroom

स्तंभः -  Pillar

कुपः -  Well

अद्वानः -  Upper storey  
Basement

अन्तर्गुटः -  Tile

मृद्घवदः -  Roof

धारिः -  Fence

बृतिः -  balcony

वितर्दिः -  Kitchen

पाकशाला

द्वारशृङ्खला



Door lock

देहली



Threshold

पूजागृहम्



Prayer  
room

द्वारम्



Door

वातायनम्



Window

सोपानम्



Step

मुख्यद्वारम्



Main Gate

तोरणम्



Decorative  
Streamers

गृहोपकरणानि



## पुष्पाणि

कमलम् – lotus जपाकुसुमम् – hibiscus मुकुलम् – bud मन्दारः – mandara -coral flower जाती – pink jasmine पाटलम् – rose सेवन्तिका – chrysanthemum मल्लिका – jasmine पारिजातम् – pArijaAtam शङ्खपुष्पम् – conch flower केतकी – ketaka flower चम्पकपुष्पम् – champaka flower

## पाकशालासाधनानि

लवित्रम् – small sickle ईली – Traditional Cutting Board छुरिका – knife दर्वी – Ladle रन्ध्रदर्वी – Ladle with holes वेल्लनी – Rolling pin पेषणयन्त्रम् – Grinder बाष्पस्थाली – Pressure cooker स्थालिका – plate चषकः – Tumbler/drinking cup चमसः – spoon द्रोणी – bucket आष्ट्रम् – frying pan पिष्टपचनम् – shallow chappati pan (tava) शूर्पः – winnowing basket पट्टः – grinding stone उलूखलम् – grinder मन्थानः – Churning stick सन्दंशः – Tongs कलशः – pot (vessel) शीतकम् – fridge उष्णरक्षकम् – Flask तापकः – boiler मिश्रकम् – mixer

## कथा

- बुद्धिमान् शिष्यः काशीनगरे एकः पण्डितः वसति। पण्डितसमीपम् एकः शिष्यः आगच्छति। शिष्य वदति - “आचार्य! विद्याभ्यासार्थम् अहम् आगतः।” पण्डितः शिष्यबुद्धिपरीक्षार्थं पृच्छति - “वत्स! देवः कुत्र अस्ति।” शिष्यः वदति - “गुरो। देवः कत्र नास्ति। कृपया भवान् एव समाधानं वदतु।” सन्तुष्टः गुरुः वदति - “देवः सर्वत्र अस्ति। देवः सर्वव्यापी। त्वं बुद्धिमान्। अतः विद्याभ्यासार्थम् अत्रैव वस।”

- पण्डितः कत्र वसति ?
- पण्डितः किमर्थं प्रश्नं पृच्छति ?
- सन्तुष्टः गुरुः अन्ते किं वदति ?

१. शिष्यः किमर्थं पण्डितसमीपम् आगच्छति ?

शिष्यः विद्याभ्यासार्थं पण्डितसमीपम् आगच्छति ।

२. पण्डितः किमर्थं प्रश्नं पृच्छति?

पण्डितः शिष्यबुद्धिपरीक्षार्थं प्रश्नं पृच्छति ।

३. पण्डितः कं प्रश्नं पृच्छति?

पण्डितः “वत्स! देवः कुत्र वसति?” इति प्रश्नं पृच्छति ।

४. देवः कुत्र अस्ति?

देवः सर्वत्र अस्ति ।

५. पण्डितः कुत्र वसति?

पण्डितः काशीनगरे वसति ।

६. पण्डितसमीपं कः आगच्छति?

पण्डितसमीपम् एकः शिष्यः आगच्छति ।

७. कः सर्वव्यापी?

देवः सर्वव्यापी ।

१. “वत्स! देवः कुत्र वसति?”

कथा - “बुद्धिमान् शिष्यः”

कः वदति? - गुरुः वदति ।

कं वदति? - शिष्यं वदति ।

कदा वदति? - शिष्यबुद्धिपरीक्षार्थ गुरुः प्रश्नं पृच्छति,  
“वत्स! देवः कुत्र वसति?” इति ।

३. “त्वं बुद्धिमान् । अतः विद्याभ्यासार्थम् अत्रैव वस ।”

कथा - “बुद्धिमान् शिष्यः”

कः वदति? - गुरुः वदति ।

कं वदति? - शिष्यं वदति ।

कदा वदति? - शिष्यः वदति, गुरो! देवः कुत्र नास्ति? कृपया  
भवान् एव समाधानं वदतु । संतुष्टः गुरुः “त्वं बुद्धिमान् ।  
अतः विद्याभ्यासार्थम् अत्रैव वस ।” इति वदति ।

- चतुरः काकः एकः काकः अस्ति । सः बहु तृषितः । सः जलार्थं भ्रमति । तदा ग्रीष्मकालः । कुत्रापि जल नास्ति । काकः कष्टेन बहुदूरं गच्छति । तत्र सः एकं घटं पश्यति । काकस्य अतीव सन्तोषः भवति । किन्तु घटे स्वल्पम् एव जलम् अस्ति । 'जलं कथं पिबामि?' इति काकः चिन्तयति । सः एकम् उपायं करोति । शिलाखण्डान् आनयति । घटे पूरयति । जलम् उपरि आगच्छति । काकः सन्तोषेण जलं पिबति । ततः गच्छति ।

१. कः बहु तृषितः ?

२. सः किमर्थं भ्रमति ?

३. घटे किम् अस्ति ?

४. काकः कि चिन्तयति ?

५. घटे किं क्षिपति ?

१) काकः किमर्थं भ्रमति?

काकः जलार्थं भ्रमति ।

२) काकः किं चिन्तयति?

“जलं कथं पिबामि?” इति काकः चिन्तयति ।

३) काकः कान् आनयति?

काकः शिलाखण्डान् आनयति ।

२. “जलं कथं पिबामि?”

कथा - “चतुरः काकः”

कः चिन्तयति? - काकः चिन्तयति ।

कदा चिन्तयति? - तृष्णितः काकः एकं घटं पश्यति । किन्तु  
घटे स्वल्पम् एव जलम् अस्ति । अतः “जलं कथं  
पिबामि?” इति काकः चिन्तयति ।

- मूढः जम्बूकः एकः जम्बूकः अस्ति । सः एकदा आहारार्थं वने भ्रमति । एकत्र सः द्राक्षालतां पश्यति । लतायाम् अनेकानि द्राक्षाफलानि सन्ति । तानि पक्वानि । जम्बूकः चिन्तयति - 'अ॒ध्य मम द्राक्षाफलानां भोजनम्' इति । द्राक्षा लब्ध्यम् उपरि उत्पतति । किन्तु द्राक्षाफलानि न प्राप्नोति । जम्बूकः कपितः भवति । सः तानि द्राक्षाफलानि दूषयति । द्राक्षाफलानि आम्लानि इति वदति । अनन्तरं स्वस्थानं गच्छति ।

१. जम्बूकः आहारार्थं कत्र अटति ?

२. जम्बूकः किं पश्यति ?

३. लतायां कानि सन्ति ?

४. जम्बूकः किं चिन्तयति ?

५. जम्बूकः किं वदति ?

१. जम्बूकः किमर्थं वने भ्रमति?

जम्बूकः आहारार्थं वने भ्रमति ।

२. द्राक्षाफलानि कथं सन्ति

द्राक्षाफलानि पक्वानि सन्ति ।

3. द्राक्षाफलानि लब्धुं जम्बूकः किं करोति?

द्राक्षाफलानि लब्धुं जम्बूकः उपरि उत्पत्ति ।

4. जम्बूकः किमर्थं कुपितः भवति?

जम्बूकः पुनः पुनः उत्पत्ति । तथापि फलानि न  
प्राप्नोति । अतः सः कुपितः भवति ।

1. “अद्य मम द्राक्षाफलानां भोजनम्” ।

कथा - मूढः जम्बूकः ।

कः चिन्तयति? - जम्बूकः चिन्तयति ।

कदा चिन्तयति? - जम्बूकः द्राक्षालतायां अनेकानि  
पक्वानि द्राक्षाफलानि पश्यति । तदा जम्बूकः  
चिन्तयति “अद्य मम द्राक्षाफलानां भोजनम्”, इति ।

2. “द्राक्षाफलानि आमूनि” ।

कथा - मूढः जम्बूकः ।

कः वदति? - जम्बूकः वदति ।

कदा वदति? - द्राक्षाफलानि लब्धुं जम्बूकः पुनः  
पुनः उत्पत्ति । तथापि फलानि न प्राप्नोति । अतः  
सः “द्राक्षाफलानि आमूनि” इति वदति ।

- कुशलः वृद्धः एकः वृद्धः आसीत् । सः क्षुधितः अभवत् । समीपे एकः आम्रवृक्षः आसीत् । वृद्धः आम्रवृक्षस्य समीपम् अगच्छत् । वृक्षे बहूनि फलानि अपश्यत् । सः अचिन्तयत् - अहं वृद्धः । मम शरीरे शक्तिः नास्ति । वृक्षः उन्नतः अस्ति । कथम् उपरि गच्छामि कथं फलं प्राप्नोमि इति । वृक्षस्य उपरि वानराः आसन् । वृद्धः एकम् उपायम् अकरोत् । सः पाषाणखण्डान् स्वीकृत्य अक्षिपत् । वानराः कुपिताः अभवन् । ते फलानि अक्षिपन् । वृद्धः तानि फलानि स्वीकृत्य सन्तोषेण अखादत् ।

१. कः क्षुधितः अभवत्?

२. वृद्धः वृक्षे कानि अपश्यत्?

३. सः किम् अचिन्तयत्?

४. वानराः कानि अक्षिपन्?

१. वृद्धः कुत्र अगच्छत्?

वृद्धः आप्रवृक्षस्य समीपम् अगच्छत् ।

२. वृक्षे कानि सन्ति?

वृक्षे बहूनि आप्रफलानि सन्ति ।

३. आप्रफलानि लब्धुं वृद्धः किम् उपायम् अकरोत्?

आप्रफलानि लब्धुं वृद्धः पाषाणखण्डान् स्वीकृत्य  
अक्षिपत् ।

४. वनाराः किम् अकुर्वन् ?

कुपिताः वानराः फलानि अक्षिपन् ।

- विद्याया: महत्वम् एकं नगरम् आसीत् । तत्र रामः सोमः इति मित्र द्वयम् आसीत् । रामः विद्याम् इच्छति । सोमः धनम् इच्छति । एकदा मित्र द्वयं विदेशम् अगच्छत् । रामः तत्र विद्याभ्यासम् अकरोत् । सोमः धन सम्पादनम् अकरोत् । अनेकानि वर्षाणि अगच्छन् । मित्र द्वयम् अपि स्वनगरम् आगच्छत् । मार्गे चोराः अगच्छन् । सोमस्य धनम् आहरन् । अनन्तरं मित्र द्वयम् नगरम् आगच्छत् । नगरे महाराजः आसीत् । सः मित्रद्वयम् अपश्यत् । अनन्तरं विद्यावन्तं रामम् आहवयत् । 'त्वं मन्त्रिस्थाने तिष्ठ' इति अवदत् । रामः मन्त्री अभवत् । सोमः विद्याहीनः । सः जीवनार्थं रामस्य सेवकः अभवत् ।

1) रामः सोमः च किम् इच्छतः ?

रामः विद्याम् इच्छति, सोमः धनम् इच्छति ।

3) महाराजः कम् आह्वयत् ?

महाराजः रामम् आह्वयत् ।

2) चोराः किम् अहरन्?

चोराः सोमस्य धनम् अहरन् ।

4) कः सेवकः अभवत्?

सोमः सेवकः अभवत् ।

१. रामः किं इच्छति ?

२. कः धनम् इच्छति ?

३. मित्र द्वयं कुत्र अगच्छत् ?

४. रामः सोमः च किम् अकरोत् ?

५. राजा रामं किम् अवदत् ?

- दैवमेव परम् एकः अहितुण्डिकः आसीत् । सः सर्पन् गृहित्वा जीवनं करोति स्म । एकदा सः एकं सर्पम् आनयति । सर्प पेटिकायां स्थापयति च । प्रतिदिनं सर्पस्य प्रदर्शनं करोति । जीवनं करोति । कदाचित् अहितुण्डिकः अन्यं ग्रामम् अगच्छत् । तस्य पत्नी पत्राः अपि अगच्छन् । सर्पः पेटिकायाम् एव बद्धः आसीत् । पञ्च दिनानि अभवन् । अहितुण्डिकः न आगच्छत् । सर्पस्य आहारः एव नास्ति । सः पेटिकातः बहिः गमनाय प्रयत्नम् अकरोत् । सः बुधुक्षितः आसीत् । अतः शक्तिः नास्ति । विफलः अभवत् । तदा पेटिकासमीपे एकः मूषकः आगच्छत् । सः पेटिकाम् अपश्यत् । 'पेटिकायां भक्ष्याणि सन्ति' इति मूषकः अचिन्तयत् । 'रन्धं करोमि' इति सः निश्वयम् अकरोत् । अनन्तरं सः रन्धं कृत्वा अन्तः प्रवेशम् अकरित् । मूषकः सर्पस्य मुखे एव अपतत् । सर्पः मूषकम् अखादत् । तेन रन्धेण एव बहिः अगच्छत् । अहो ! सर्पस्य सौभाग्यम् । मूषकस्य दौर्भाग्यम् !!

३) मूषकः किम् अचिन्तयत्?

"पेटिकायां भक्ष्याणि सन्ति" इति मूषकः अचिन्तयत् ।

१) अहितुण्डिकः किं कृत्वा जीवनं करोति?

अहितुण्डिकः सर्पन् गृहीत्वा जीवनं करोति ।

४) मूषकः किम् अकरोत्?

मूषकः रन्धं कृत्वा पेटिकायाः अन्तः प्रवेशम् अकरोत् ।

२) सर्पः कुत्र बद्धः आसीत्?

सर्पः पेटिकायां बद्धः आसीत् ।

५) सर्पः कथम् बहिः अगच्छत्?

सर्पः रन्धेण बहिः अगच्छत् ।

१. अहितुण्डिकः कुत्र अगच्छत् ?

२. पेटिकासमीपं कः आगच्छत् ?

३. कः कस्य मुखे अपतत् ?

४. सर्पः कम् अखादत् ?

- न्यायश्रद्धा पूर्वं सगरः नाम नृपः आसीत् । तस्य पत्नीद्वयम् आसीत् । किन्तु एकः अपि पुत्रः न आसीत् । अतः सगरः दुःखितः अभवत् । अनन्तरं सः एकं मुनिवरं सेवितवान् । मुनिवरः सन्तुष्टः अभवत् । सः वरम् अयच्छत् । सगरस्य ज्येष्ठपत्नी एकं पुत्रम् अलभत । तस्य नाम असमञ्जः । कनिष्ठपत्नी षष्ठिसहस्रं पुत्रान् अलभत । कालः अतीतः । सर्वे पुत्राः अवर्धन्त । राजकुमारः असमञ्जः बहु दुष्टः आसीत् । सः विनोदार्थं नगरस्य अन्यान् बालान् जले क्षिपति स्म । म्रियमाणान् तान् दृष्टा आनन्देन हसति स्म च । एवम् असमञ्जः अनेकान् बालान् अमारयत् । ततः जनाः दुःखिताः अभवन् । ते नृपस्य समीपम् आगच्छन् । असमञ्जस्य दुराचारम् अवदन् । तदा नृपः सचिवान् आहवयत् । पुत्रस्य विषयम् अवदत् । "इदानीं किं करोमि ?" इति तान् अपृच्छत् । सचिवाः अवदन् - "प्रजापीडकः असमञ्जः भवता राज्यतः निष्कासितः भवतु" इति । नृपः सचिवानां निर्णयम् अङ्गीकृतवान् । पुत्रम् अपि असमञ्जः सः

निष्कासितवान् । अहो न्याये नृपस्य श्रद्धा । सतः सज्जनाः वदन्ति 'त्यजेदेकं कुलस्यार्थं' इति ।

१. नृपस्य नाम किम् ?
२. राजकुमारः कीद्रुशः आसीत् ?
३. जनाः किमर्थं दुःखिताः अभवन् ?
४. कः निर्णयम् अयच्छत् ?
५. सज्जनाः किं वदन्ति ?

- साधूनां जीवनम् गड्गातीरे एकः साधुः आसीत् । सः साधुः बहु उपकारं करोति स्म । यः अपकारं करोति तस्यापि उपकारं करोतिस्म । एकस्मिन् दिने सः गड्गानध्यां स्नानं कर्तुं नदीं गतवान् । नदीप्रवाहे एकः वृशिवकः आगतः । सः साधुः वृशिवकं द्रुष्टवान् । तं हस्तेन गृहीतवान् । तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान् । किन्तु सह साधोः हस्तम् अदशत् । साधुः तं त्यक्तवान् । वृशिवकः जले अपतत् । पुनः साधुः वृशिवकं गृहीत्वा तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान् । पुनः वृशिवकः हस्तम् अदशत् । एवम् अनेकवारं साधुः वृशिवकं गृहीत्वान् । वृशिवकः अपि अदशत् । नदीतीरे एकः पुरुषः आसीत् । "साधु महराज ! अयं वृशिवकः दुष्टः । सः पुनः पुनः दशति । भवान् किमर्थं तं हस्ते वृथा स्थापयति ? वृशिवकं त्यजतु " इति उक्तवान् सः । तदा साधुः उक्तवान् - "वृशिवकः क्षुद्रः जन्तुः । दंशनं तस्य स्वभावः । सः स्वस्य स्वभावं न त्यजति । अहं तु मनुष्य । अहं मम परोपकारस्वभावं कथं त्यजामि ? "इति । यः अपकारिणाम् अपि उपकारं करोति सः एव साधुः भवति ।

१. गड्गातीरे कः आसीत् ?
२. साधुः किं करोति ?
३. वृशिवकः किम् अकरोत् ?
४. कः साधुः भवति ?

- सहसा विदधीत न क्रियाम् एकस्मिन् ग्रामे एका महिला वसति स्म । सा एकं नकुलं पालयति स्म । नकुलस्य विषये तस्याः बहुप्रीतिः आसीत् । महिलायाः एकः शिशुः अपि आसीत् । तस्याः ग्रहस्य समीपे जलं न आसीत् । जलम् आनेतुं सा दूरं गच्छति स्म । एकस्मिन् दिने जलम् आनेतुं सा अगच्छत् । ग्रहे कोऽपि न आसीत् । तस्याः शिशुः निद्रितः आसीत् । महिला बहिः गता । तदा एकः सर्पः ग्रुहम् आगतः । नकुलः सर्पम् अपश्यत् । सर्पः शिशुसमीपम् अगच्छत् । नकुलः तत्क्षणे एव सर्पस्य उपरि अपतत् । क्षणमात्रेण एव सः सर्पम् अमारयत् । महिला जलं गृहीत्वा आगता । द्वारे एव नकुलः उपविष्टः । महिला नकुलस्य मुखम् अपश्यत् । नकुलस्य मुखं रक्तमयम् । सा अचिन्तयत् - 'अयं नकुलः मम शिशुम् अखादत् । अतः एव अस्य मुखं रक्तम् ' इति । सा तत्क्षणे एव एकं शिलाखण्डं नकुलस्य उपरि अक्षिपत् । नकुलः मृतः । अनन्तरं सा ग्रहस्य अन्तः गता । तत्र शिशुः क्रीडति । तत्रैव मृतं सर्पम् अपश्यत् । सा बहु दुःखिता अभवत् । अविचारेण मया नकुलः संहतः इति सा पश्चापेन पीडिता अभवत् । अतः किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम् । विचारं कृत्वा एव कर्तव्यम् ।

- वैराग्येण एव तृप्तिः चन्द्रगुप्तः मगधदेशस्य नृपः । तस्य मन्त्री चाणक्यः । सः तपोधनः, राजतन्त्रज्ञ च आसीत् । मन्त्री अपि सः एकस्मिन् उटजे वसति स्म । वैराग्यभावनाया सः पूर्णः आसीत् । एकदा नृपः चाणक्याय कम्बलान् समर्पितवान् । ' एतान् कम्बलान् दरिद्रेभ्यः ददातु ' इति सः सूचितवान् । चाणक्यस्य उटजं नगरात् बहिः आसीत् । केचन चोराः कम्बलान् अपहर्तु चिन्तितवन्तः । ते रात्रौ चाणक्यस्य उटजं प्राविशन् । मध्यरात्रसमयः । शीत-कालः । अतीव शैत्यम् आसीत् । तथापि चाणक्यः कटे सुप्तः आसीत् । तस्य पत्नी अपि कटे एव सुप्ता आसीत् । पाश्वे कम्बलानां राशिरेव अस्ति । चाणक्यः कम्बलं विना निद्रां करोति !! चोराः चौर्ये न अकुर्वन् । ते चाणक्यं प्रबोधितवन्तः । चोराः - " चाणक्य ! पाश्वे कम्बलानां राशिरेव अस्ति । तथापि त्वं किमर्थं भूमौ शयनं करोषि ? " इत्यपृच्छन् । चाणक्यः उक्तवान् - " कम्बलाः नृपेण दत्ताः । ते दरिद्रेभ्यः दातव्याः । श्व प्रभाते वितरणं करिष्यामि । तेषाम् उपयोगं कर्तुं मम नास्ति अधिकारः । किञ्च अहं विरक्तः, सदा तृप्तः" इति । इदं श्रुत्वा चोरेषु लज्जा उत्पन्ना । ' अन्येषां द्रवयस्य उपयोगेन अधरमः भवति इति चाणक्यस्य विचारः अस्ति । वयं जीवने पितृदिनम् अन्यस्य द्रव्यमेव अपहरामः, अधर्मः कुर्मः, पापस्य सङ्ग्रहश्च भवति ' इति चिन्तयित्वा ते चाणक्यं क्षमां प्रार्थितवन्तः । ततः सज्जनाः अबवन् च ।

## प्रहेलिका

- अस्थि नास्ति शिरो नास्ति बाहुरस्ति निरङ्गुलिः । नास्ति पाददवयं किन्तु गाढमालिङ्गति स्वयम् ॥
  - उसका अस्थि नहिं है, शिर भी नहिं है । उसके दो हाथ हैं परन्तु उसमें उङ्गलि नहिं है । उसके पैर नहिं हैं । वह हमें जोर से आलिङ्गन करता है । वोलो वह क्या है ? उत्तर – जामा (a shirt) ।
  - It has no bones or head. It has two hands, but without fingers. It does not have legs. It embraces us closely. What is it? Ans: A shirt.
- किम् इच्छति नरः काश्यां, भूपानां को रणे हितः, को वन्द्यः सर्व देवानां, दीयतामेकमुत्तरं
  - What does a person wish for in Kashi? => मृत्युं (death)
  - In a battle what a king desires? जयः
  - Who is worshiped by all gods? मृतुञ्जयः (combining both above)
  - Give a single answer.
  - प्रहेलिका 2 – किम् – What इच्छति – wants नरः – man काश्याम् – in (the town of) kAshi ? भूपानाम् of kings कः (को) what रणे – in the battle field हितः – good (desired)? कः – who वन्द्यः worthy of worship सर्वदेवानाम् for all devAH, दीयताम् may (it) be given एकम् one उत्तरम् answer ।
  - उत्तरम् – मृत्युञ्जयः (मृत्युं जयः:- shivaH) – Man desires death (mRtyuH) in kASHI (as you are assured of mokSham (liberation).) And, Kings want victory (jayaH) in the battlefield. If you put the two answers (in saMskRtam) together, you get the word mRtyu~jjayaH, which is another name for shivaH. And indeed, shivaH is worthy of worship by all the devAH. Thus, with one answer, all three questions are solved.
- सीमन्तिनीषु का शान्ता? राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः? विदुषां का सदा वन्द्या? अत्रैवोक्तं न बुद्ध्यते ॥२॥
  - अन्वयः का सीमन्तिनीषु शान्ता? सीता, गुणोत्तमः राजा अभूत्? रामः। का सदा विद्वद्भिः वन्द्या? विद्या। अत्र एव उक्तं (परम) न बुद्ध्यते॥

- शब्दार्थ : सीमन्तिनीषु-नारियों में। शान्ता-शान्त स्वभाव वाली। कोऽभूत्-कौन हुआ।  
गुणोत्तमः-गुणों में सबसे अच्छा। विद्वभिः -विद्वानों के द्वारा। वन्द्या-वन्दना के योग्य।  
उक्तम्-कहा गया। बृद्धयते-जाना जाता है।
  - सरलार्थ : नारियों में कौन (सबसे अधिक) शान्त स्वभाव वाली है? सीता। कौन-सा राजा गुणों में उत्तम हुआ? राम। विद्वानों के द्वारा कौन हमेशा वन्दना करने योग्य है? विद्या। यहीं कही गई (यह बात) है (फिर भी मनुष्यों के द्वारा) नहीं जानी जा रही है अर्थात् पता नहीं चल रहा है।
  - उत्तरः सीता (first and last letter of first phrase, similarly for other phrases have their answers in their own phrases), राम, विद्या
- पुरुषः कीदृशो वेति प्रायेण सकलाः कलाः। मध्यवर्णद्वयं त्यक्त्वा ब्रूहि कः स्यात् सुरालयः ॥
  - सर्वा: कलाः यः जानाति सः कः इति सम्बोध्यते ? तस्मिन् शब्दे मध्ये स्थितम् अक्षरद्वयं यदि निष्कास्येत तर्हि स्वर्गः इति अर्थः प्राप्यते । कः सः शब्दः ?
  - What type of person knows all the arts? It will be a home of lords if two letters are deleted from the middle of the word.
  - उत्तरः नागरिकः (civilized person) नाकः means heaven (स्वर्ग, सुरालया - home of gods)
- विष्णोः का वल्लभा देवी लोकत्रितयचारिणी | वर्णावाद्यन्तिमौ दत्त्वा कः शब्दः तुल्यवाचकः
  - त्रिषु लोकेषु या सञ्चरति, या विष्णोः प्रिया पत्नी सा का ?
  - तस्य शब्दस्य आदौ अन्ते च एकैकः वर्णः यदि योज्यते तर्हि तुल्यवाचकः शब्दः भवति । कः सः शब्दः ?
  - Who is the beloved of Lord viShNu, and, who travels all 3 worlds. To that answer, add 2 syllables – one at the front and one at the end. Now, (please tell) what word conveys ‘comparison’.
  - उत्तरम् – First Half – मा – lakShmiH । To that, add the syllable ‘sa’ to the front, and ‘na’ to the end. The resultant word समान – refers to equality, the final answer.
- न तस्यादिः न तस्यान्तः मध्ये यः तस्य तिष्ठति। तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद् ।।
  - जिसके प्रारंभ में भी नकार (न) है और अंत में भी नकार(न) है। बीच में उसके यकार(य) वह तेरे पास भी है और मेरे पास भी, वह क्या ?
  - नयन / "Nayana" means eye

## संग्राह्य विषयः १लोकाः

- गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुस्साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

गुरुः – Guru (Spiritual teacher) ब्रह्मा – Brahma, the creator; गुरुः – Guru विष्णुः Vishnu, the protector; गुरुः – देवः महेश्वरः Shiva, one who causes dissolution. गुरुः – साक्षात् परं ब्रह्म – Parabrahma itself; तस्मै unto that श्रीगुरवे Guru नमः (my) respects.

Guru is Brahma The Creator. Guru is Vishnu The Protector. Guru is Shiva the one who causes dissolution. Guru is truly the ultimate essence of everything. Unto that Guru, I offer my namaH (surrender / respect).

- अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥

अज्ञान-तिमिर-अन्धस्य – Of a person who is blind because of the darkness of ignorance ज्ञान-अञ्जन-शलाकया – using a stick to apply the eyeliner of knowledge चक्षुः eye उन्मीलितम् opened येन by whom तस्मै unto that श्रीगुरवे Guru नमः (my) respects.

Guru is Brahma The Creator. Guru is Vishnu The Protector. Guru is Shiva the one who causes dissolution. Guru is truly the ultimate essence of everything. Unto that Guru, I offer my namaH (surrender / respect).

- अग्जाननपद्मार्कं गजाननम् अहर्निशम् । अनेकदं तं भक्तानाम् एकदन्तम् उपास्महे ॥

अग्जाननपद्मार्कः (the son who is like a sun, to Parvati's face, which itself is like a lotus, and, just as the Sun causes the lotus to blossom, gaNeshan casues Parvati's face to blossom (brings joy to her) )= गणेशः = गजाननः / अहः = day निशा = night / अनेकदः = giver of many things तं = him (dvitIyA vibhaktiH) भक्तानाम् – of devotees / एकदन्तः – One with only one tusk / उपास्महे – we pray to || (Please see illustration below by mInAkShI M.)

- वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभं । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

वक्रतुण्डः = One with a curved trunk / महाकायः = One with a big body / कोटिसूर्यसमप्रभः = One whose brilliance is equal to 1 crore (1,00,00,000) or 10 million ( 10,000,000) Suns / निर्विघ्नम् = lack of obstacles / कुरु = please do / मे = for me / देवः = god / सर्वकार्येषु = In all things (I do) / सर्वदा = at all times

- वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् । देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

वसुदेवसुतः son of vasudevaH; देवः god; कंसचाणूरमर्दनः destroyer of kaMsa and chANura; देवकीपरमानन्दः – Cause of the utmost joy of devakI (mother); कृष्णः – kRShNa; वन्दे I bow down to him; जगद्गुरुः guru to the whole world; (All these words are in dvitIyA vibhaktiH is the shlokaH.)

I bow down to kRShNaH, who is the guru to the whole world, who is the son of vasudevaH, is the destroyer of kaMsa and chANura, and, who is the cause of utmost joy for his mother, devakI.

- शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं द्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

शुक्लाम्बरधरः – One who is wearing white clothes; विष्णुः – viShNu; शशिवर्णः – one who is the color of the moon; चतुर्भुजः – one who has four arms; प्रसन्नवदनः – one who has a pleasant face; ध्यायेत् – May one meditate upon; सर्वविघ्नोपशान्तये – for all obstacles to disappear.

May one meditate upon viShNu, who wears white clothes, who is the color of the moon, who has four arms and who has a pleasant face, for all obstacle to subside / disappear.

- हरः पापानि हरतात् शिवो दत्तां सदा शिवम् | न जानामीति नो ब्रूयात् सर्वज्ञपदभाग् यतः||

हरः shivaH; पापानि the effects of bad actions; हरतात् may he destroy; शिवो – shivaH; दत्तां – may he give; सदा always; शिवम् auspiciousness; न जानामि – I don't know!; इति – like that; नो ब्रूयात् – cannot say; सर्वज्ञ-one who knows everything पदभाग् holding a position; यतः because.

May Shiva destroy the consequences of our past (bad) actions. May he (shivaH) always give (us) auspiciousness. He (shivaH) cannot say "I don't know!" because he is holding the position of being all knowing.

- आसन्नाय सुदूराय गुप्ताय प्रकटात्मने | सुलभायातिदुर्गाय नमः चित्राय शम्भवे ||

आसन्नाय – unto the one who is nearby; सुदूराय – unto the one who is far away; ... गुप्ताय – unto the one who is hidden; प्रकटात्मने – unto the one who is visible; सुलभाय – unto the one who is easily reachable; अतिदुर्गाय – unto the one who is very difficult to reach; नमः – namaH (surrender); चित्राय – unto the wonderful (person); शम्भवे unto shambhuH||

परमानंद = जो निकट है, परमानंद = जो दूर है, गुप्ताय = जो छिपा हुआ है, प्रकटात्मने = जो प्रकट है. सुलभाय = जो आसानी से सुलभ हो, अतिदुर्गाय = जो पहुंचना कठिन हो, नमः = को नमस्कार, चित्राय = रहस्यमय, शम्भवे = भगवान शिव के लिए

जो निकट भी हैं और दूर भी हैं, जो प्रत्यक्ष भी हैं और गुप्त भी, जो सहज में उपलब्ध भी हैं और जिन्हें पाना बहुत कठिन भी है, ऐसे अद्भुत भगवान शम्भु को मेरा प्रणाम है।

- सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि | विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ||

सरस्वति (8,1) – hey! sarasvati! नमः(1,1) तुभ्यं (4,1) – namaH unto you. वरदे (8,1) – hey! giver of boons! कामरूपिणि (8,1) – hey! embodiment of my desire (which is

knowledge) | विद्यारम्भं (2,1) – start of (my) studies करिष्यामि (1,1 – future) I will do सिद्धिः – fulfillment भवतु (1,1 – may) – let there be मे (4,1 or 6,1) for me / my सदा – always||

Oh! Goddess Sarasvati! Giver of Boons! Embodiment of my desire (knowledge)! I will start studying. May my success always be there.

- नमस्ते शारदे देवि! काश्मीरपुरवासिनि! त्वाम् अहं प्रार्थये नित्यं विद्यां बुद्धिं च देहि मे ||

नमः(1,1) ते (4,1) unto you शारदे (8,1) Hey! shArade! देवि (8,1) ! काश्मीरपुरवासिनि (8,1) Hey! Resident of kAshmIrapuram! त्वाम् (2,1) – you (as an object) अहं (1,1) – I प्रार्थये (3,1) I pray – नित्यं (o) – always विद्यां (2,1) – knowledge बुद्धिं (2,1) – intellect च (o) and देहि (2,1 please) मे (4,1) unto me ||

Hey! shArade devi! Hey! resident of kAshmIrapuram1 I pray to you regularly. Please give me intellect and knowledge.

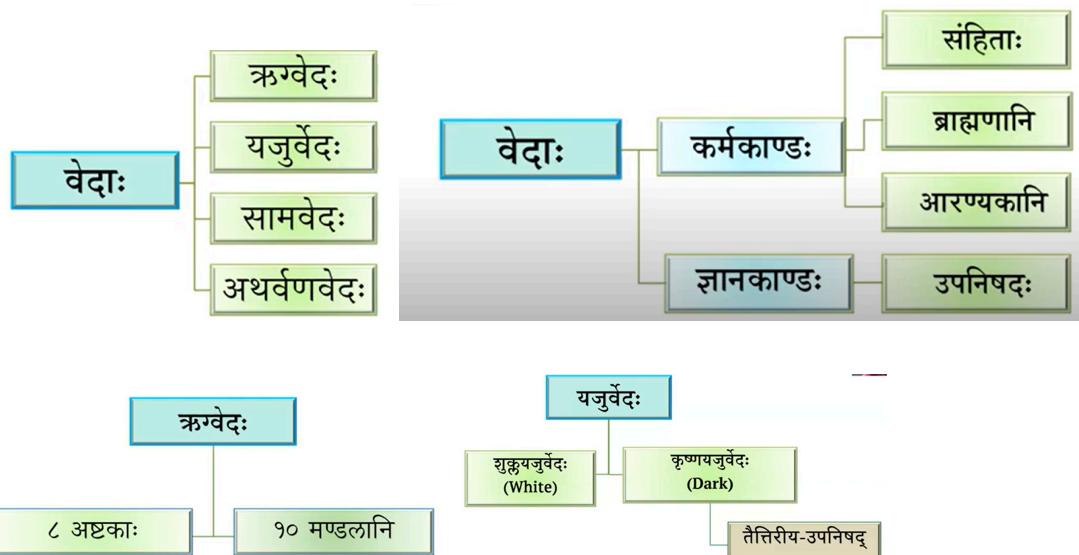
- नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सूरपूजिते शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

Meaning: 1.1: Salutations to the Mahamaya, the Great Enchantress of the World, Who is Worshiped by the Devas in HerAbode (Sri Pitha). 1.2: Who has the Conch, Disc and Mace in Her Hands, Salutations to Mahalakshmi.

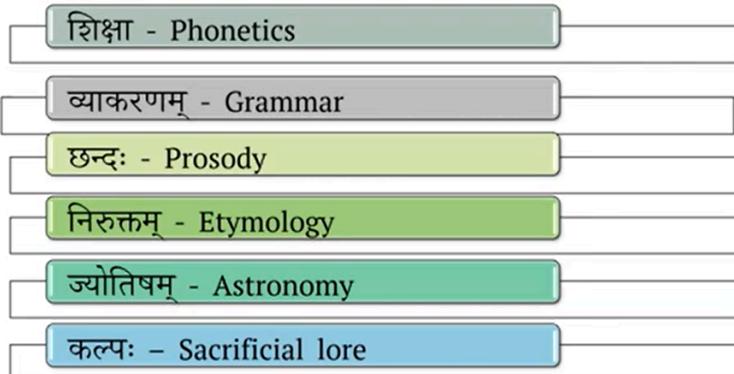
- पद्मासनस्थिते देवी परब्रह्मस्वरूपिणि । परमेशि जगन्मातार्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते

Salutations to the wealth Goddess Mahalakshmi, who has the seat of Lotus, embodiment of ultimate consciousness, mother (lord) of all the worlds

# संस्कृत वाङ्मय परिचयः



## वेदाङ्गानि



ii) वेदेषु कति भागः सन्ति? ते के?

वेदेषु चत्वारः भागः सन्ति ।

- > संहिता:
- > ब्राह्मणानि
- > आरण्यकानि
- > उपनिषदः

i) कति वेदाः सन्ति?

चत्वारः वेदाः सन्ति ।

iv) वेदाङ्गानि कृति? तानि कानि?

iii) यजुर्वेदस्य भागद्वयं किम्?

यजुर्वेदस्य शुक्लयजुर्वेदः, कृष्णयजुर्वेदः इति  
भागद्वयम् अस्ति ।

षड्वेदाङ्गानि सन्ति ।

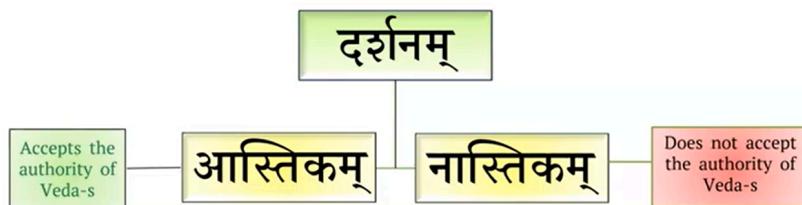
- शिक्षा
- व्याकरणम्
- छन्दः
- निरुक्तम्
- ज्योतिषम्
- कल्पः

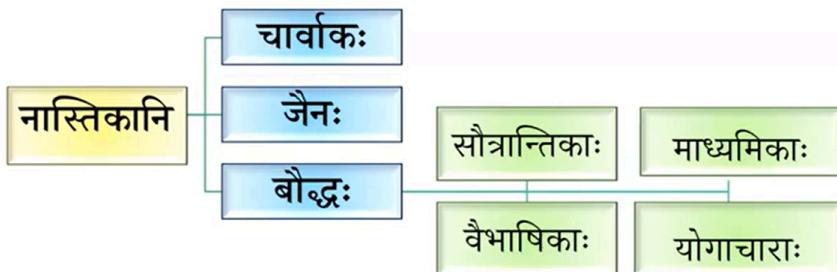
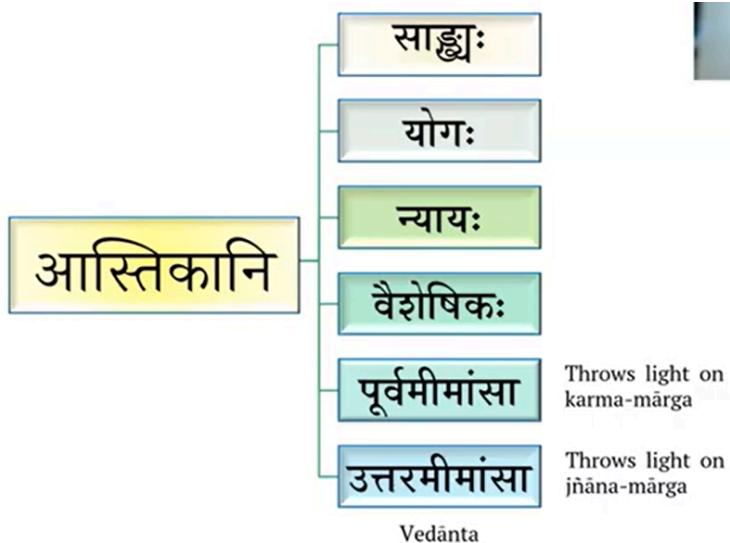
## उपनिषदः

Ten principal Upaniṣad-s :

- |                    |                      |
|--------------------|----------------------|
| १. ईशावास्योपनिषत् | ६. माण्डूक्योपनिषत्  |
| २. केनोपनिषत्      | ७. तैत्तिरीयोपनिषत्  |
| ३. कठोपनिषत्       | ८. बृहदारण्यकोपनिषत् |
| ४. प्रश्नोपनिषत्   | ९. छान्दोग्योपनिषत्  |
| ५. मुण्डकोपनिषत्   | १०. ऐतरेयोपनिषत्     |

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरिः ।  
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा ॥

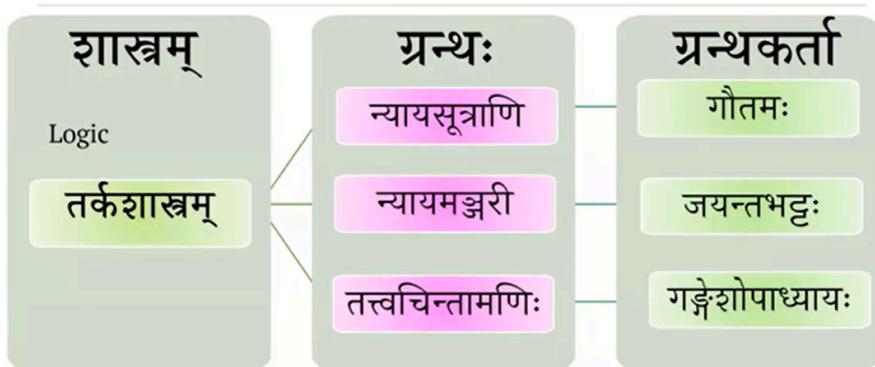
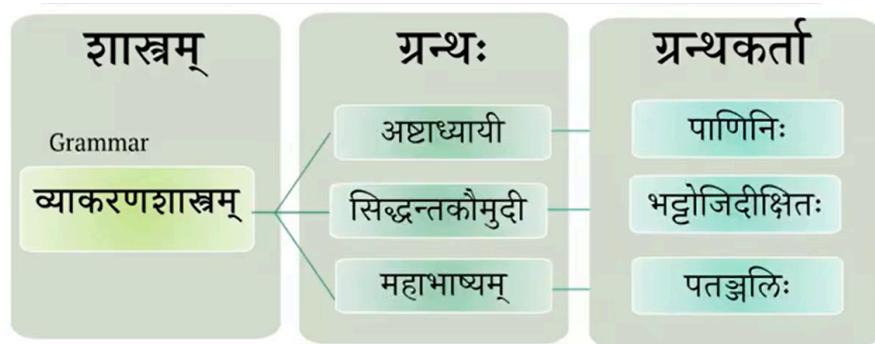


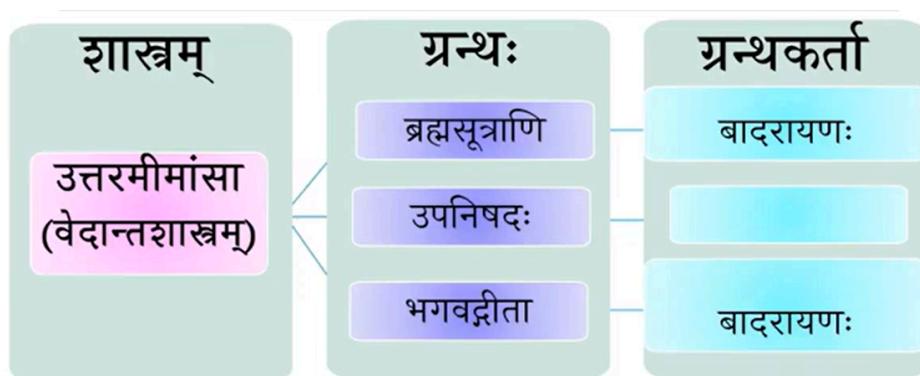
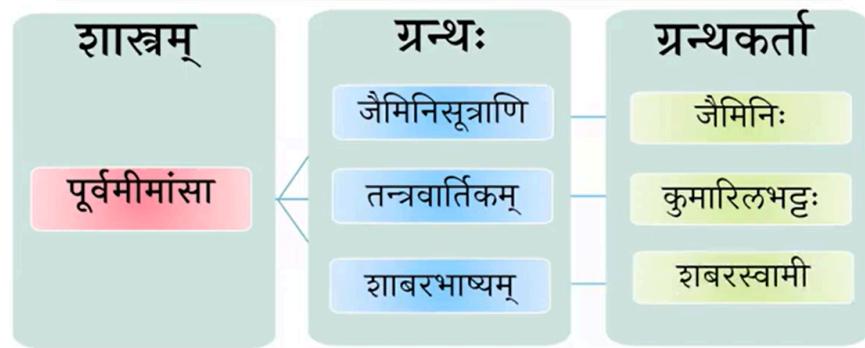


## पुराणानि

- |                       |                   |                   |
|-----------------------|-------------------|-------------------|
| १. मत्स्यपुराणम्      | ७. ब्रह्मपुराणम्  | १३. नारदपुराणम्   |
| २. मार्कण्डेयपुराणम्  | ८. वामनपुराणम्    | १४. पद्मपुराणम्   |
| ३. भागवतपुराणम्       | ९. वराहपुराणम्    | १५. लिङ्गपुराणम्  |
| ४. भविष्यत्पुराणम्    | १०. विष्णुपुराणम् | १६. गरुडपुराणम्   |
| ५. ब्रह्माण्डपुराणम्  | ११. वायुपुराणम्   | १७. कूर्मपुराणम्  |
| ६. ब्रह्मवैर्तपुराणम् | १२. अग्निपुराणम्  | १८. स्कन्दपुराणम् |

# शास्त्राणि





बाद्रायणः (व्यास)

## रामायणम्

आदिकाव्यं, रचिता - वाल्मीकिः, 7 काण्डानि, ~24000 श्लोकाः

## संस्कृतवाङ्यपरिचयः - रामायणम्

- |                     |                 |
|---------------------|-----------------|
| ❖ बालकाण्डम्        | ❖ सुन्दरकाण्डम् |
| ❖ अयोध्याकाण्डम्    | ❖ युद्धकाण्डम्  |
| ❖ अरण्यकाण्डम्      | ❖ उत्तरकाण्डम्  |
| ❖ किञ्चिन्धाकाण्डम् |                 |

1) रामायणस्य रचयिता कः?

रामायणस्य रचयिता महर्षिः वाल्मीकिः ।

2) रामायणे कति काण्डानि सन्ति? तानि कानि?

रामायणे सप्त काण्डानि सन्ति ।

१) बालकाण्डम्

२) अयोध्याकाण्डम्

३) अरण्यकाण्डम्

४) किञ्चिन्धाकाण्डम्

५) सुन्दरकाण्डम्

६) युद्धकाण्डम्

७) उत्तरकाण्डम्

3) श्लोकस्य अर्थं लिखत ।

यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यज्ञोऽपि सहायताम् ।

अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुच्यति ॥

For those following the path of justice even animals (horizontally moving beings) render help; but one who takes the wrong path (strays away from the path of Dharma), even his own brother abandons him.

4) रामायणे प्रायः कति श्लोकाः सन्ति?

रामायणे प्रायः २४००० श्लोकाः सन्ति ।

## महाभारतम्

भारतं पञ्चमो वेदः | 1 lakh verses. Larger than the Greek classics Iliad and Odyssey put together. व्यास रहस्यं 800 verses - secret message of Vyasa

3) “यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्” – अस्य अर्थम् आङ्ग्लभाषायां लिखत ।

Whatever is found in the Mahābhāratam, is also found elsewhere, what is not found in it, does not exist anywhere either.

4) महाभारते कति पर्वाणि सन्ति? तानि कानि?

महाभारते अष्टादश (१८) पर्वाणि सन्ति । तानि –

- |               |                |                     |
|---------------|----------------|---------------------|
| 1. आदिपर्व    | 7. द्रोणपर्व   | 13. अनुशासनपर्व     |
| 2. सभापर्व    | 8. कर्णपर्व    | 14. अश्वमेधपर्व     |
| 3. अरण्यपर्व  | 9. शल्यपर्व    | 15. आश्रमवासिकपर्व  |
| 4. विराटपर्व  | 10. सौसिकपर्व  | 16. मौसलपर्व        |
| 5. उद्योगपर्व | 11. स्त्रीपर्व | 17. महाप्रस्थानपर्व |
| 6. भीष्मपर्व  | 12. शान्तिपर्व | 18. स्वर्गारोहणपर्व |

## भासः

### भासः - स्वप्रवासवदत्तम्

- ❖ भासः
- ❖ पद्मावती
- ❖ स्वप्रवासवदत्तम्
- ❖ यौगन्धरायणः
- ❖ महाराजः - उदयनः
- ❖ पत्नी - वासवदत्ता

4) Bhāsa has composed 13 plays. Renowned among them is  
Svapnavāsavadattam

5) With whose assistance did Udayana defeat his enemies?  
**Udayana defeated his enemies with the assistance of Padmāvatī's brother.**

| स्वर-सचिः |                            | परपदस्य आदौ-वर्णः |               |               |               |               |               |               |               |               |               |               |               |
|-----------|----------------------------|-------------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|
|           |                            | अ                 | आ             | इ             | ई             | उ             | ऊ             | ऋ             | ऋ             | ल             | ए             | ऐ             | ओ             |
| अ         | अ + अ<br>= आ               | अ + आ<br>= आ      | अ + इ<br>= ए  | अ + ई<br>= ए  | अ + उ<br>= ओ  | अ + ऊ<br>= ओ  | अ + ऋ<br>= अ॒ | अ + ऋ<br>= अ॒ | अ + ल<br>= अ॒ | अ + ए<br>= ए  | अ + ऐ<br>= ऐ  | अ + ओ<br>= ओ  | अ + औ<br>= औ  |
| आ         | आ + अ<br>= आ               | आ + आ<br>= आ      | आ + इ<br>= ए  | आ + ई<br>= ए  | आ + उ<br>= ओ  | आ + ऊ<br>= ओ  | आ + ऋ<br>= अ॒ | आ + ऋ<br>= अ॒ | आ + ल<br>= अ॒ | आ + ए<br>= ए  | आ + ऐ<br>= ऐ  | आ + ओ<br>= ओ  | आ + औ<br>= औ  |
| इ         | इ + अ<br>= य               | इ + आ<br>= या     | इ + इ<br>= ये | इ + ई<br>= ये | इ + उ<br>= यु | इ + ऊ<br>= यु | इ + ऋ<br>= यू | इ + ऋ<br>= यू | इ + ल<br>= यू | इ + ए<br>= ये | इ + ऐ<br>= यै | इ + ओ<br>= यो | इ + औ<br>= यौ |
| ई         | ई + अ<br>= य               | ई + आ<br>= या     | ई + इ<br>= ये | ई + ई<br>= ये | ई + उ<br>= यु | ई + ऊ<br>= यु | ई + ऋ<br>= यू | ई + ऋ<br>= यू | ई + ल<br>= यू | ई + ए<br>= ये | ई + ऐ<br>= यै | ई + ओ<br>= यो | ई + औ<br>= यौ |
| उ         | उ + अ<br>= व               | उ + आ<br>= वा     | उ + इ<br>= वि | उ + ई<br>= वी | उ + उ<br>= ऊ  | उ + ऊ<br>= ऊ  | उ + ऋ<br>= वू | उ + ऋ<br>= वू | उ + ल<br>= वू | उ + ए<br>= वे | उ + ऐ<br>= वै | उ + ओ<br>= वो | उ + औ<br>= वौ |
| ऊ         | ऊ + अ<br>= व               | ऊ + आ<br>= वा     | ऊ + इ<br>= वि | ऊ + ई<br>= वी | ऊ + उ<br>= ऊ  | ऊ + ऊ<br>= ऊ  | ऊ + ऋ<br>= वू | ऊ + ऋ<br>= वू | ऊ + ल<br>= वू | ऊ + ए<br>= वे | ऊ + ऐ<br>= वै | ऊ + ओ<br>= वो | ऊ + औ<br>= वौ |
| ऋ         | ऋ + अ<br>= र               | ऋ + आ<br>= रा     | ऋ + इ<br>= रि | ऋ + ई<br>= री | ऋ + उ<br>= रु | ऋ + ऊ<br>= रू | ऋ + ऋ<br>= रू | ऋ + ऋ<br>= रू | ऋ + ल<br>= रू | ऋ + ए<br>= रे | ऋ + ऐ<br>= रै | ऋ + ओ<br>= रो | ऋ + औ<br>= रौ |
| ऋ         | ऋ + अ<br>= र               | ऋ + आ<br>= रा     | ऋ + इ<br>= रि | ऋ + ई<br>= री | ऋ + उ<br>= रु | ऋ + ऊ<br>= रू | ऋ + ऋ<br>= रू | ऋ + ऋ<br>= रू | ऋ + ल<br>= रू | ऋ + ए<br>= रे | ऋ + ऐ<br>= रै | ऋ + ओ<br>= रो | ऋ + औ<br>= रौ |
| ल         | ल + अ<br>= ल               | ल + आ<br>= ला     | ल + इ<br>= लि | ल + ई<br>= ली | ल + उ<br>= लु | ल + ऊ<br>= लू | ल + ऋ<br>= लू | ल + ऋ<br>= लू | ल + ल<br>= लू | ल + ए<br>= ले | ल + ऐ<br>= लै | ल + ओ<br>= लो | ल + औ<br>= लौ |
| ए         | ए + अ<br>= ए॒(पदान्त्रे)   | ए + आ<br>= अया    | ए + इ         | ए + ई         | ए + उ         | ए + ऊ         | ए + ऋ         | ए + ऋ         | ए + ल         | ए + ए         | ए + ऐ         | ए + ओ         | ए + औ         |
|           | ए + अ<br>= अय<br>(पदमध्ये) |                   |               |               |               |               |               |               |               |               |               |               |               |
| ऐ         | ऐ + अ<br>= आय              | ऐ + आ<br>= आया    | ऐ + इ         | ऐ + ई         | ऐ + उ         | ऐ + ऊ         | ऐ + ऋ         | ऐ + ऋ         | ऐ + ल         | ऐ + ए         | ऐ + ऐ         | ऐ + ओ         | ऐ + औ         |
| ओ         | ओ + अ<br>= ओ॒(पदान्त्रे)   | ओ + आ             | ओ + इ         | ओ + ई         | ओ + उ         | ओ + ऊ         | ओ + ऋ         | ओ + ऋ         | ओ + ल         | ओ + ए         | ओ + ऐ         | ओ + ओ         | ओ + औ         |
|           | ओ + अ<br>= अव<br>(पदमध्ये) | अवा               | अवि           | अवी           | अवु           | अवू           | अवू           | अवू           | अवू           | अवे           | अवै           | अवो           | अवौ           |
| औ         | औ + अ<br>= आव              | औ + आ             | औ + इ         | औ + ई         | औ + उ         | औ + ऊ         | औ + ऋ         | औ + ऋ         | औ + ल         | औ + ए         | औ + ऐ         | औ + ओ         | औ + औ         |

## References

- Pravesh Patha ([Ref](#))